Chapter-5

पंचम् अध्याय

(राष्ट्रीय आंदोलन की भूमिका में द्विवेदी जी का काव्य)

राष्ट्रीय जागरण की विकासात्मक पृष्ठभूमियों के अंतर्गत पूर्ववर्ती विवेचन में निर्दिष्ट किया जा चुका है कि आधुनिक हिन्दी काव्य किस प्रकार राष्ट्रीय जागरण की चेतना को रूपायित करता हुआ राष्ट्रीय आंदोलनों एवं स्वतंत्रता के लिए अनेक विध अभियानों से सम्बद्ध रहा है। एक प्रकार से देखा जाय तो भारतेन्दु युग से लेकर आज तक हिंदी की राष्ट्रीय काव्यधारा विविध काव्यांदोलनों तथा काव्य की अनेक विध विषयवस्तु की भूमियों को स्पर्श करने के बावजूद भी निरन्तर गतिशील रही। राष्ट्र कवि सोहनलाल द्विवेदी की रचनाओं के परिचय से सम्बंधित पूर्ववर्ती अध्याय के विवेचन में भी यह लक्ष्य किया जा चुका है कि उनकी काव्य-कृतियाँ समकालीन राजनीतिक परिस्थितियों, देशवासियों की स्वातंत्र्य चेतना तथा अनेक समसामयिक घटनाओं को आधार बनाकर प्रस्तुत हुई हैं। अतः राष्ट्रीय आंदोलन की भूमिका में उनके काव्य का विवेचन कवि के कृतित्व के एक महत्वपूर्ण पक्ष को उजागर करता है।

(क) राष्ट्रीय आन्दोलन

द्विवेदी जी की जीवनी पर विचार करते समय तृतीय अध्याय के अंतर्गत यह लक्ष्य किया जा चुका है कि उन्होंने सन् १९२०-२१ ई० में अपनी काव्य-यात्रा का प्रारंभ किया था। यही वह समय है जब कि लोकमान्य तिलक के निधनोपरांत देश में कोई ऐसा सक्षम नेता नहीं रह गया था जो राष्ट्र का सूत्र संभाल सके। ऐसी सम्भ्रमावस्था में महात्मा गांधी ने भारतीय राजनीतिक सूत्रों को संभाला। वे अपने साथ नूतन चिन्तन-प्रणाली लेकर आये थे। भारतीय राजनीति में पदार्पण करते ही उन्होंने अपनी सत्य एवं अहिंसावादी रीति-नीतियों का पालन करते हुए देश को उसी दिशा में मोड़ने का यत्न किया। अपने जीवन के अंतिम दिनों पर्यन्त उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवं राजनीति को जिस हद तक प्रभावित किया, वह विश्व के इतिहास में अद्वितीय है। राष्ट्रीय आंदोलन का यह समय गांधी युग के नाम से भारतीय इतिहास में ख्यात है। हमारे आलोच्य कवि भी संयोगवश गांधी जी के नेतृत्व में चलनेवाले राष्ट्रीय आंदोलनों से पूर्णतया प्रभावित होकर

गांधी युग के प्रारंभ से ही अपनी काव्य-यात्रा प्रारंभ करते हैं । उनकी रीति-नीतियों से प्रभावित व परिचालित अहिंसात्मक सत्याग्रहों में भावात्मक तद्रूपता स्थापित करते हुए वे किस तरह काव्य-सर्जन करते रहे यह पूर्ववर्ती पृष्ठों में लक्ष्य किया गया है । अतः कवि की राष्ट्रीय कृतियों का सम्यक् अध्ययन करने के लिए गांधी-युग का अर्थात् अंग्रेज शासकों के विरुद्ध गांधी जी ने किस तरह अहिंसात्मक आंदोलन चलाते हुए शताब्दियों से सुप्त जनता के पुनर्जागरण का अभूतपूर्व कार्य सम्पन्न किया उसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करना आवश्यक प्रतीत होता है । इसके अभाव में कवि की राष्ट्रीय कृतियों का, जो युग सापेक्ष हैं, सम्यक् अध्ययन अस्पष्ट रह जायेगा । तदर्थ उनकी राष्ट्रीय रचनाओं का अध्ययन करने से पूर्व राष्ट्रीय आंदोलन की संक्षिप्त भूमिका प्रस्तुत की जा रही है ।

भारतीय राजनीतिक सूत्रों को संभालते ही देश की आवश्यकतानुसार गांधी जी ने अहिंसात्मक असहयोग का कार्यक्रम प्रस्तुत किया जो सितम्बर १९२० ई० के कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में स्वीकार भी कर लिया गया । इधर अली बंधुओं के साथ उन्होंने भारत-भ्रमण करते हुए सर्वत्र मानो हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य का शंखनाद किया । वे अब एक ऐसे जन-संघर्ष का नेतृत्व करने जा रहे थे जो अहिंसक होते हुए भी शासक के प्रति एक खुला विद्रोह था ।[1] किन्तु तत्कालीन वायसराय लार्ड रीडिंग इस आंदोलन को चाणक्य-नीति से दबा देना चाहते थे ।[2]

प्रिंस आफ वेल्स के भारत-आगमन पर गांधी जी के नेतृत्व में जिस ढंग से उनका स्वागत किया गया उसका उल्लेख पूर्ववर्ती अध्यायों में किया गया है । उससे अपमानित ब्रिटिश सरकार ने दमनचक्र जोरों से चलाना प्रारंभ किया । हजारों लोगों को जेलों में ठूंस दिया गया । सभी तरह के संगठन गैरकानूनी कर दिये गये, सभाओं तथा जुलूसों को हिंसात्मक बल-प्रयोग के द्वारा बिखेरने का यत्न किया गया। इधर गांधी जी ने अपने नेतृत्व में अहिंसात्मक प्रयोग के रूप में गुजरात स्थित बारडोली

तालुके में जब सत्याग्रह प्रारंभ किया । अब कांग्रेस और सरकार दोनों ही संघर्ष के लिए तत्पर थे किन्तु इसी बीच ४ फरवरी १६२२ ई० को उत्तरप्रदेश के गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा नामक गांव में भीषण रक्तकांड हो जाने पर गांधी जी ने बारडोली सत्याग्रह को स्थगित कर दिया । उनके इस आकस्मिक निर्णय का अत्यधिक विरोध किया गया । गांधी जी ने अपने निर्णय के समर्थन में पं० जवाहर लाल नेहरू को लिखा था, `आप विश्वास मानिये कि अगर आंदोलन को स्थगित न किया जाता तो हम अहिंसात्मक संघर्ष के स्थान पर हिंसात्मक संघर्ष ही कर रहे होते ।`[3] जिस पर अपनी स्वीकृति देते हुए उन्होंने लिखा था, ` ~~प्रस्तर्क~~-प्रस्ताव बिल्कुल उचित था, जो गंदगी फैल रही थी उसे रोककर नये सिरे से कुछ करना गांधी जी के लिए निहायत जरूरी हो गया था ।`[4] आंदोलन स्थगित हो जाने पर १० मार्च १६२२ ई० को गांधी जी को गिरफतार कर लिया गया और उन्हें छ: वर्ष का कारावास दिया गया । किन्तु दो वर्ष पश्चात् ११जनवरी, १६२४ ई० को उनका एपेन्डिक्साइटिस का आपरेशन होने पर उन्हें जेल से मुक्त कर दिया गया । इन दो वर्षों में देश का राजनीतिक वातावरण पर्याप्त मात्रा में परिवर्तित हो चुका था । सत्याग्रहियों के उपरान्त हिन्दू- मुस्लिमों में भी परस्पर वैमनस्य हो गया था । अब गांधी जी रचनात्मक कार्यक्रम के द्वारा देश की जनता में जागृति लाना चाहते थे । उनका अभिमत था कि देश के आर्थिक व सामाजिक पुनरुत्थान के द्वारा राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना आसान होगा ।[5] तदर्थ उन्होंने सन् १६२४ ई० तक के प्राय: तीन वर्ष अपने आपको राजनीतिक विवादों से बिल्कुल असंपृक्त रखते हुए अपना पूर्ण समय नीचे की ओर से ~~रक्र्दु~~ राष्ट्र-निर्माण करने के महत्वपूर्ण कार्य में लगाना प्रारंभ किया । देश का भ्रमण करते हुए छोटे-छोटे गांवों तक पहुंचकर उन्होंने जनता को जगाते हुए उनका आर्थिक व सामाजिक पुनरुत्थान कैसे किया यह परवर्ती अध्याय में लक्ष्य किया जायेगा ।

इधर निर्धारित समयावधि से दो वर्ष पूर्वदो नवम्बर १६२७ ई० को

वाइसराय ने साइमन कमीशन की नियुक्ति की घोषणा की । इस आकस्मिक घोषणा ने भारतीयों को विशेष व्याघात इसलिए पहुँचाया कि उसमें एक भी भारतीय को स्थान नहीं मिला था । तदर्थ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने हर जगह हर तरह उसके बहिष्कार का निर्णय लिया । कमीशन जहाँ भी गया, सर्वत्र उसका काले झण्डों से स्वागत हुआ और उसके विरोध में हड़तालें हुईं । पुलिस अत्याचार में लाला लजपतराय की मृत्यु हुई । गांधी जी के पुनरुत्थानवादी आंदोलन एवं कमीशन के बहिष्कार का सामयिक आधार पाकर देश की जनता व राजनीति में चेतना का उफान सा आ गया ।

एक सर्वदल-सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसने पार्लमिन्टरी ढंग की सरकार, संयुक्त चुनाव-पद्धति एवं अल्प संख्यकों का संरक्षण जैसे जटिल समस्याओं पर आधारित एक नेहरू रिपोर्ट की जिसकी स्वीकृति के समय 'औपनिवेशिक स्वराज्य या पूर्ण स्वाधीनता' के प्रश्न पर सदस्यों में विवाद छिड़ गया । किन्तु सन् १९२८ ई० के कांग्रेस के कलकत्ता-अधिवेशन में गांधी जी के प्रयास से नेहरू रिपोर्ट को इस शर्त पर स्वीकार किया गया कि यदि ३१ दिसम्बर १९२९ ई० तक सरकार ने इसे स्वीकार नहीं किया तो कांग्रेस पूर्ण स्वाधीनता की मांग करेगी और आवश्यकता पड़ने पर अहिंसात्मक आंदोलन भी करेगी ।

इधर तत्कालीन वाइसराय लार्ड इरविन ने ३१ अक्टूबर १९२९ के दिन गोलमेज परिषद की सूचना भारतवासियों को दी जिसमें मांटेगू घोषणा की सिर्फ नये सिरे से व्याख्या ही की गई थी । दिसम्बर १९२९ का महीना राजनीतिक हलचल का महीना था । सरकार से संघर्ष का वातावरण निर्मित हो चुका था । गांधी जी की प्रेरणा से पं०जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए । ३१दिसम्बर १९२९ को रावी के तट पर 'पूर्ण-स्वाधीनता' प्रस्ताव पारित हुआ । अब राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने सदस्यों को न केवल कौंसिलों से त्यागपत्र

देने का आदेश दिया अपितु गांधी जी के नेतृत्व में महासमिति को सविनय अवज्ञा प्रारंभ करने का अधिकार भी दिया । २६ जनवरी १९३० को देशव्यापी स्तर पर 'स्वाधीनता दिवस' मनाया गया । जनता के जोश और उत्साह को देखकर उन्हें प्रतीत होने लगा कि देश जन-आंदोलन के लिए तत्पर है । उन्होंने प्राय: एक शताब्दी पूर्व के नमक कानून[६] को तोड़ने की घोषणा करके सविनय अवज्ञा आंदोलन का सूत्रपात किया । ६ अप्रैल १९३० ई० को दाण्डी नामक स्थान पर नमक कानून तोड़ने पर उन्हें गिरफतार किया गया । अतएव धारासणा के सरकारी नमक डिपो पर कब्जा करने का जो कार्य शेष रह गया वह साबरमती आश्रम के वयोवृद्ध इमाम साहब के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ । उस समय सत्याग्रहियों का अनुशासन अद्वितीय रहा ।[७]

इधर गर्मियों में सायमन कमीशन की रिपोर्ट प्रकाशित हुई जो अत्यन्त निराशाजनक थी । फिर भी लार्ड इरविन और गांधी जी के बीच विचार-विमर्श के पश्चात् समझौता हो गया जिसका प्रमुख स्वर था, कांग्रेस सविनय अवज्ञा बंद कर देगी और सरकार तमाम दमनकारी आर्डिनेन्सों को वापस लेकर सभी सत्याग्रही बंदियों को मुक्त कर देगी । यद्यपि उक्त समझौते का जवाहरलाल नेहरू समेत अधिकांश कांग्रेसियों ने विरोध किया तथापि मार्च १९३१ के कांग्रेस के करांची अधिवेशन में गांधी जी के द्वारा की गई स्पष्टता के परिणाम स्वरूप उसे स्वीकार कर लिया गया । अब कांग्रेस के एक मात्र प्रतिनिधि के रूप में गांधी जी गोलमेज परिषद में सम्मिलित होने के उद्देश्य से लन्दन पहुंचे जहां प्रतिकूल राजनीतिक वातावरण के कारण शीघ्र ही भारत लौट आये । तुरन्त ही तत्कालीन वाइसराय लार्ड विलिंग्डन ने उन्हें गिरफतार कर लिया । गांधी -इरविन समझौते का अनादर करते हुए आर्डिनन्स के सहारे आंदोलन को कुचल देने के लिए सभी कार्यवाहियां की गई जिनसे कांग्रेस संगठनपूर्णरूपेण मृतप्राय हो जाय । इसी समय प्रेस की स्वतंत्रता का अपहरण करनेवाले कई आर्डिनन्स भी जारी हुए ।[८]

गांधी जी यरवडा जेल में बंद ही थे और सरकार ने १७ अगस्त १९३२ को दलितों के पृथक निर्वाचन का निर्णय प्रकाशित किया जिसके विरोध में उन्होंने २० सितम्बर से आमरण अनशन करने की घोषणा की । यह दिन समूचे राष्ट्र में उपवास और प्रार्थना दिवस के रूप में मनाया गया । सभी सवर्ण नेताओं और अछूत नेता डा० आंबेडकर के पारस्परिक विचार-विमर्श के पश्चात प्रसिद्ध पूना-पैक्ट के रूप में अंततोगत्वा सहमति प्राप्त हुई तथापि जब तक ब्रिटिश मंत्रिमंडल ने उस पर अपनी स्वीकृति की मुहर न लगा दी तब तक गांधी जी ने उपवास न तोड़ा ।

अब गांधी जी आवश्यकतानुसार हरिजनोद्धार के कार्य में संलग्न हो गये । उन्होंने 'यंग इण्डिया' के स्थान पर 'हरिजन' के अतिरिक्त 'हरिजन सेवक' के नाम से उसका हिंदी संस्करण निकालना प्रारंभ किया । सितम्बर १९३३ ई० में साबरमती आश्रम 'हरिजन सेवक संघ' को समर्पित कर वे वर्धा चले आये । अस्पृश्यता निवारण के संदर्भ में वैचारिक मतभेद होने पर उन्होंने अक्टूबर १९३४ में कांग्रेस से सन्यास ग्रहण कर लिया । दूसरी बार राजनीतिक विवादों से पृथक होते हुए उन्होंने अखिल भारत ग्रामोद्योग संघ की स्थापना की और ग्रामीण अर्थ व्यवस्था का प्रारूप उपस्थित करते हुए आगामी तीन वर्ष तक वे ग्रामोद्धार का कार्य करते रहे । परवर्ती अध्याय में आर्थिक पक्ष पर विचार करते हुए इस पर अधिक प्रकाश डाला जाएगा ।

प्रांतीय स्वराज्य के नये अधिनियम के अनुसार सन् १९३७ ई० में आम चुनाव हुआ जिसमें कांग्रेस लगभग छः प्रांतों में अपना मंत्रिमण्डल बना सकी । यह राष्ट्र के लिए एक महत्वपूर्ण घटना थी । ये मंत्रिमंडल सरकार के सम्मुख संकट उत्पन्न करने की अपेक्षा कांग्रेस के चुनाव-घोषणा-पत्र में उल्लिखित सामाजिक व आर्थिक कार्यक्रम को पूर्ण करने में संलग्न रहे ।

सन् १९३९ ई० में यूरोप में द्वितीय महायुद्ध छिड़ जाने पर जिन शर्तों के

आधार पर भारत ने सहयोग देने की तत्परता दिखाई थ वे अस्वीकृत हुईं फलत: गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह घोषित करके सरकार का विरोध किया। प्रथम और द्वितीय सत्याग्रही विनोबा और जवाहरलाल गिरफतार हो गये। इनके अतिरिक्त सहस्रों सत्याग्रही भी गिरफतार हुए। गांधी जी ने इस बार आंदोलन को इस ढंग से संचालित किया था कि देश में कहीं उत्तेजना की कोई हिंसात्मक घटना न घटी।

इधर २२ मार्च १६४२ को राष्ट्र को बीसियों स्वतंत्र राज्यों में विभाजित करनेवाले स्टैफर्ड क्रिप्स के प्रस्ताव का गांधी जी ने अत्यधिक विरोध किया[६] जिसकी राष्ट्र में जबर्दस्त प्रतिक्रिया हुई। कांग्रेस की महासमिति ने ७ अगस्त १६४२ को 'भारत छोड़ो' की ऐतिहासिक घोषणा की। शीघ्र ही राष्ट्र का वातावरण एकदम गरम हो गया। इधर सरकार ने भी अपने अस्तित्व को टिकाये रखने के लिए कड़े हाथ से काम लेने का निर्णय किया। गांधी जी के साथ-साथ अन्य बड़े-बड़े नेताओं को गिरफतार कर लिया गया जिसकी बंगाल, बिहार, संयुक्त- प्रांत तथा बंबई जैसे प्रदेशों में कल्पनातीत प्रतिक्रिया हुई। जनता ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध खुलेआम बगावत कर दी। हिंसात्मक बल-प्रयोगों एवं सरकारी संस्थाओं को तोड़-फोड़कर आग लगाने का प्रयास किया गया। हिंसात्मक उपद्रवों के कारण दुखी होकर गांधी जी ने जेल में रहकर भी २१ दिन के उपवास आरंभ किये। राष्ट्रीय दृष्टिकोण से १६४२ की घटनाएं एक दुखदायी विरासत ही सिद्ध हुईं। 'भारत छोड़ो' आंदोलन के कारण गांधी जी चिंतित थे ही कि जेल में ही उनके सचिव महादेवभाई देसाई तथा अर्धांगिनी कस्तूरबा का आकस्मिक निधन हो जाने पर उन पर जैसे वज्राघात हुआ। अस्वस्थता के कारण उन्हें जेल से मुक्त किया गया। शीघ्र ही राजगोपालाचार्य के सहयोग से उन्होंने सितम्बर १६४४ ई० में महम्मदअली जिन्ना से भेंट वार्ता की जो असफल रही। जुलाई १६४५ को इंगलैण्ड में मजदूर दल की सरकार आने पर भारत के प्रति उसका रुख बदला। इधर आजाद हिंद फौज के एक मुसलमान अफसर को

दी गई कोर्ट-मार्शल के दण्ड के विरुद्ध कलकत्ते में मुसलमानों के जुलूस ने उग्र हिंसात्मक रूप धारण कर लिया था। इसके अतिरिक्त वायुसेना में अनुशासनहीनता, बम्बई में नाविकों का विद्रोह, पुलिस सिपाहियों का असंतोष आदि के कारण ब्रिटिश मंत्रिमण्डल सत्ता का हस्तांतरण करना चाहती थी। प्रमुख प्रश्न भारत की एकता या विभाजन से सम्बंधित था। कांग्रेस एवं स्वयं मजदूर सरकार कोभी विभाजन पसन्द नहीं था किन्तु जिन्ना की जिद्द के कारण मुस्लिम लीग ने विधान परिषद के बहिष्कार का निर्णय करते हुए १६ अगस्त १९४६ को 'सीधी कार्यवाई' दिवस मनाया। अंततोगत्वा १५ अगस्त १९४७ ई० को दीर्घकालीन संघर्ष के पश्चात् भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई किन्तु द्विराष्ट्रीय विभाजन के साथ।

राष्ट्रीय आंदोलन के संदर्भ में दिये गये उपर्युक्त विवरण के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि एक विशिष्ट जीवन-प्रणाली लेकर गांधी जी ने भारतीय राजनीति को १९२० ई० से १९४८ ई० तक संभाला जिसे भारतीय इतिहास में गांधी युग कहा जाता है। ब्रिटिश सरकार की अन्यायपूर्ण दमननीतियों का अहिंसात्मक सत्याग्रहों के द्वारा गांधी जी ने भारतीय जन-समाज में राष्ट्रीय चेतना के जागरण का प्रयास किया। ऐसा करते हुए जनता या आतंकवादी क्रांतिकारियों की ओर से जब-जब हिंसात्मक बल प्रयोग किये गये तब-तब उन्होंने न केवल सत्याग्रह को स्थगित घोषित किया अपितु दुखी होकर उपवास भी किये। कुल मिलाकर प्राय: तीन दशकों के कालांतर्गत उन्होंने तीन अहिंसात्मक सत्याग्रह किये जिनका सीधा प्रभाव सोहनलाल द्विवेदी जी के काव्य-सर्जन पर पड़ा जिसे हम परवर्ती पृष्ठों में लक्ष्य करेंगे।

(ख) आतंकवादी आंदोलन :

स्वाधीनता प्राप्ति के निमित्त चलाये गये गांधीवादी आंदोलन के संक्षिप्त इतिहास पर दृष्टिपात करने के पश्चात् आतंकवादी आंदोलन का विहंगावलोकन कर लेना इसलिए आवश्यक प्रतीत होता है कि गांधीवादी आंदोलन के प्राय: समानांतर

रूप से यह चलता रहा जो हमारे आलोच्य कवि के चिन्तन पर यथासमय प्रभाव डालता रहा है । उनकी जीवनी वाले विगत अध्याय में यह लक्ष्य किया जा चुका है कि यतीन्द्रनाथ दास आदि क्रांतिकारियों की शहादत पर कवि का व्यथित मानस श्रद्धांजलियां प्रदान करता रहा । संभवत: कवि की बलिदानी भावना को इन क्रांतिकारियों के आत्मसमर्पण से गति प्रदान हुई थी ।

घोर असंतोष एवं निराशा हिंसात्मक क्रांति की जन्मदात्री होती है । शारीरिक शक्ति एवं बलिदान में यह विश्वास करती है । क्रांति का निर्वहण करनेवाले नेता क्रांतिकारी या आतंकवादी कहलाते हैं । भारत में प्रथम आतंकवादी आंदोलन का प्रारंभ बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक अर्थात् प्राय: १६०२-३ ई० में हुआ । प्रारंभ में इस क्रांति का उद्देश्य जन-जागृति ही था, स्वतंत्रता प्राप्ति का नहीं ।[१०] किन्तु श्री बालगंगाधर तिलक ने जबसे इन क्रांतिकारियों का नेतृत्व संभाला, उनके उद्देश्य में परिवर्तन हुआ । 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' कहकर वे शिवाजी और मध्य मराठाओं की गौरव गाथाओं की स्मृति दिलाते हुए जनता में राष्ट्रीय भावनाएं जागृत करने का सबल प्रयास करते रहे । उनके निधन के पश्चात् सुयोग्य नेताओं के नेतृत्व का अभाव एवं ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रियावादी दमन-नीति के परिणाम स्वरूप आतंकवादी आंदोलन शिथिल हो गया ।

प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् जैसा कि हम ऊपर देख आये हैं, महात्मा गांधी ने भारतीय राजनीति पर अपना प्रभुत्व जमाया और धीरे- धीरे जनता गांधीवादी विचारधारा के प्रति आकर्षित होने लगी । किन्तु असहयोग आंदोलन के स्थगित होने पर पुराने क्रांतिकारियों ने उद्दामवादी नयी पीढ़ी का सहयोग प्राप्त कर पुन: सशस्त्र क्रांति की ज्वाला प्रज्ज्वलित की । इस तरह प्राय: १६२३ ई० से आतंकवादी आंदोलन भारत में पुन: सक्रिय होने लगा । उत्तरप्रदेश, पंजाब, बंगाल आदि इसके प्रमुख केन्द्र रहे । चंद्रशेखर आजाद, वीर भगतसिंह, बटुकेश्वर दत्त, राजगुरु सुखदेव, अशफाक उल्ला, रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशनसिंह

प्रभृति प्रसिद्ध क्रांतिकारी उत्तर प्रदेश के ही थे। काकोरी के साहसिक आक्रमण के समाचार ने देश भर में तनावपूर्ण वातावरण पैदा कर दिया और ब्रिटिश सरकार को जबर्दस्त धक्का पहुंचा। षडयंत्र में सम्मिलित ४० व्यक्तियों को पकड़ा गया जिनमें से राजेन्द्र लाहिडी, रामप्रसाद ~~बिस~~ बिस्मिल, अशफाक उल्ला, रोशनसिंह आदि को फांसी दी गई। शेष कैदियों को मुक्त करने के लिए सरदार भगतसिंह, कुंदनलाल तथा आजाद ने मिलकर एक योजना बनाई किन्तु उसमें उन्हें सफलता न मिली। अब समस्त भारत के क्रांतिकारियों को अपना संगठन स्थापित करने की आवश्यकता का अनुभव हुआ। तदर्थ ८ दिसम्बर १९२८ में भारत के प्रमुख क्रांतिकारियों का एक सम्मेलन हुआ जिसमें एक कार्यकारी समिति की स्थापना हुई। भगतसिंह, आजाद, सुखदेव, शिव शर्मा, विजयकुमार, फणीन्द्रनाथ घोष, कुन्दनलाल आदि उसके सदस्य नियुक्त हुए।

सन् १९२८ ई० के सायमन कमीशन का विरोध करते हुए लाला लाजपतराय की मृत्यु हुई। भगतसिंह, राजगुरु, आजाद आदि ने मिलकर योजनापूर्वक सेन्डर्स का खून करके लाला जी के खून का बदला ले लिया। सन् १९२८ से लेकर १९३१ ई० तक की प्रमुख घटनाएं इस प्रकार हैं। ८ अप्रैल १९२९ ई० को विट्ठलभाई पटेल एसेम्बली के अध्यक्ष के नाते पब्लिक सेफटी बिल का विरोध कर रहे थे तब वीर भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने मिलकर एसेम्बली में बम फेंका और आत्मसमर्पण कर दिया। इधर यतीन्द्रनाथ दास अपने अन्य साथियों के साथ लाहौर षडयंत्र में पकड़े गये और उन्हें कारावास मिला। यहां कैदियों के प्रति जो अमानुषी अत्याचार कियाजाता था उसके विरोध में भगतसिंह, दत्त, तथा यतीन्द्रनाथ कई दिनों से अनशन कर रहे थे। अन्य साथियों के उपवास छोड़ देने पर भी यतीन्द्रनाथ ने अंत तक उपवास न छोड़े। फलत: १३ सितम्बर १९२९ ई० को भारत का यह वीर सपूत अनशन करते-करते शहीद हो गया। वीर भगतसिंह तथा चन्द्रशेखर आजाद भी पकडे गये। भगतसिंह को सन् १९३१ ई० में फाँसी दी गई और आजाद अल्फ्रेड पार्क में लड़ते-लड़ते स्वयं शहीद हो गया। इन दोनों की शहादत के पश्चात उत्तरभारत

का आंदोलन शिथिल हो गया ।

उत्तर-प्रदेश एवं पंजाब के अतिरिक्त बंगाल भी क्रांतिकारियों का केन्द्र रहा । चटगांव का हत्याकांड भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध है । एक ओर गांधी जी का सविनय अवज्ञा आंदोलन चल ही रहा था कि चटगांव के सत्तर नवयुवकों ने मिलकर सामूहिक रूप से पुलिस लाइन, टेलीफोन एक्सचेन्ज, एफ० आई० हेडक्वार्टर्स पर आक्रमण करके सभी पुलिस अधिकारियों को उन्हीं के शस्त्रों से खत्म कर दिया और पुलिस लाइन में आग लगा दी । जिला मजिस्ट्रेट को भी परेशान कर दिया । परिस्थिति को काबू में लेने के लिए सरकार को तोपों का सहारा लेना पड़ा । बंगाल का यह आंदोलन न केवल शहरों तक ही सीमित रहा, बल्कि गांवों तक फैला जिसमें मध्यम वर्ग तथा नवयुवकों ने सहयोग दिया । इसके अतिरिक्त कुछ नव-युवतियों ने भी ऐसे आंदोलनों में अपना स्वर मिलाया । २४ दिसम्बर १६३१ को कुमारी शांति घोष तथा कुमारी सुनीति चौधरी ने स्टीवन्स को गोली मार दी । वैसे दोनों पकड़ी भी गईं ।

उक्त आंदोलनों के अतिरिक्त छिट-पुट षडयंत्र भी चलते रहे जिनमें गया का १६३३ ई० एवं बलिया का १६३५ ई० उल्लेखनीय है । द्वितीय विश्वयुद्ध के समय पुन: अवसर प्राप्त कर आतंकवादियों ने अपना सिर उठाया । वीर सुभाषचंद्र बोस ने कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देते हुए सन् १६३६ ई० में आजाद हिंद फौज की स्थापना की । देश में प्राय: सर्वत्र भ्रमण कर उन्होंने जनता को स्वाधीनता प्राप्ति के यज्ञ में अपना सहयोग देने के लिए प्रेरित किया । उनका प्रसिद्ध नारा `मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा` देश भर में बुलंद हो गया । १६४२ ई० का `भारत छोड़ो` आंदोलन में जो अकल्पित हिंसात्मक आंदोलन हुआ यह अंशत: सुभाषबाबू के क्रांतिकारी वक्तव्यों का परिणाम भी कहा जा सकता है ।

उपर्युक्त विवरण के आधार पर इस निष्कर्ष तक पहुंचा जा सकता है कि यद्यपि आतंकवादी आंदोलन प्राय: राष्ट्रीय आंदोलन के साथ-साथ समानांतर रूप से

चलता रहा है तथापि गांधीवादी सत्याग्रह आंदोलन जब-जब शिथिल होता रहा, वह पर्याप्त ऊंचाई पर रहा । बलिदान एवं सर्वस्व समर्पण करने की भावना द्वारा इन क्रांतिकारियों ने देशभक्ति का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करते हुए देश-वासियों में राष्ट्रीय जागरण एवं बलिदान की भावना उत्पन्न की है । इनके आक्रमणों के विरुद्ध यद्यपि सरकार ने दमननीति अपनायी तथापि इनके आतंक से प्रत्येक युग के बाद सरकार संवैधानिक सुधार करती रही ।

(ग) काव्यगत सन्दर्भ और राष्ट्रीय आन्दोलन :

हमने देखा कि स्वाधीनता प्राप्त करने के राष्ट्रीय आंदोलन के अंतर्गत राष्ट्र में दोनों प्रकार के (हिंसात्मक एवं अहिंसात्मक) बल-प्रयोग हुए हैं । आतंक-वादियों के हिंसात्मक बल-प्रयोगों के परिणाम स्वरूप यद्यपि ब्रिटिश सरकार तथा भारतीय जनता आतंकित रही और राष्ट्रीय जागरण की प्रक्रिया में यथासंभव गत्यात्मक उफान भी आया, तथापि गांधीवादी अहिंसात्मक सत्याग्रहों तथा गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रमों के कारण भारतीय जनता में अभूतपूर्व जागृति आयी तथा ब्रिटिश सरकार भी गांधीवादी नीतियों से अत्यधिक प्रभावित ही नहीं आतंकित भी रही । स्वाधीनता की लक्ष्यपूर्ति के लिए गांधी जी ने राष्ट्रीय जागरण एवं राष्ट्र-निर्माण के दो अति विशिष्ट पक्षों को उजागर किया । इस भगीरथ कार्य को सम्पन्न करने के लिए उन्होंने अपना समग्र जीवन राष्ट्र के चरणों में समर्पित कर दिया । उनके मानव-प्रेम, त्याग, अनवरत साधना व अटल सिद्धान्तों के प्रति अनुराग के कारण कोटि-कोटि देशवासियों में त्याग की भावना जगने लगी । गांधी के द्वारा संचालित इस राष्ट्रीय यज्ञ में द्विवेदी जी ने अपनी काव्य-साधना के द्वारा समिधा का काम किया । बापू के सम्मुख सुमधुर शैली में प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रीय जागरण व निर्माण के कार्य में अपूर्व सहयोग दिया । समूचे ~~राष्ट्र~~ राष्ट्र को शताब्दियों की निद्रा में से जागृत करते हुए राष्ट्रीय आंदोलन के महायज्ञ में मनसावाचाकर्मणासम्मिलित हो जाने के लिए उत्प्रेरित करते रहे । इस व्यापक भावभूमि

के कारण उनके काव्य में राष्ट्रीय जागरण के निम्नलिखित पक्ष प्रकाश में आते हैं :-

१- मातृभूमि के प्रति श्रद्धा एवं प्रेम की भावना ।

२- अतीत के प्रति गौरव की भावना ।

३- वर्तमान स्थिति के प्रति संवेदना और देशवासियों का आह्वान ।

४- स्वतंत्रता-सेनानियों के प्रति सम्मान का भाव ।

इन आधारों के माध्यम से कवि ने किस प्रकार राष्ट्रीय चेतना को उद्बुद्ध करने का यत्न किया है उसका सोदाहरण विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है ।

१-मातृभूमि के प्रति श्रद्धा एवं प्रेम की भावना :

अपने देश के प्रति श्रद्धा एवं प्रेम की भावना राष्ट्रीय चेतना के लिए परम आवश्यक है । यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि आधुनिक युग के नवजागरण काल से ही भारत भूमि के प्रति श्रद्धा की भावना के निर्माण का प्रयास किया गया था । इसी से जुड़ा हुआ चिन्तन पक्ष है राष्ट्र के अतीत के प्रति गौरव का भाव। यह विशेषकर युगीन परिस्थिति के संदर्भ में इसलिए आवश्यक था क्योंकि अंग्रेज मातृभूमि तथा उसकी ऐतिहासिक परंपरा के प्रति हीन-भावना का योजना-बद्ध रूप से निरन्तर प्रचार-प्रसार कर रहे थे । सोहनलाल द्विवेदी से पूर्व तथा समकालीन अनेक कवियों की कितनी ही रचनाएं भारतभूमि की वन्दना को लिए हुए हैं । जब तक अपने देश के प्रति श्रद्धा और प्रेम की प्रतिष्ठा नहीं होती तब तक किसी प्रकार के राष्ट्रीय जागरण को अवकाश नहीं होता । सम-सामयिक दुरवस्था को तो व्यवस्था परिवर्तन से दूर किया जा सकता है किन्तु उसके प्रति विद्रोह एक प्रतिक्रियात्मक ~~परिवर्तन से दूर किया जा सकता है किन्तु उ~~ चेतना है, जबकि देश के प्रति प्रेम और श्रद्धा का भाव एक रचनात्मक प्रक्रिया ही कही जायगी । स्वराज्य का भवन भी मूल चेतना पर खड़ा किया जा सकता है ।

कवियों ने श्रद्धा और प्रेम की उक्त रागात्मक चेतना के लिए भारतभूमि की

प्राकृतिक स्थिति, नैसर्गिक शोभा, उज्ज्वल अतीत तथा महापुरुषों, विचारकों और युग-निर्माताओं के प्रति सम्मान भावना आदि को काव्य का विषय बनाया है। देशवासियों में श्रद्धा का भाव जगाने के लिए भारतभूमि को माता का रूप दिया गया है और साथ ही उसे पवित्रता की भाव-चेतना से सम्पृक्त किया गया है। जैसा कि पूर्ववर्ती पृष्ठों में उल्लेख किया गया है कवि सोहनलाल द्विवेदी ने माँ भारती को आराध्य देवी माना है। अतः अपनी प्रथम राष्ट्रीय-कृति 'भैरवी' में सर्वप्रथम माँ के प्रति श्रद्धा एवं पूज्य भाव के साथ अनुरागमयी वंदना प्रस्तुत की है -

'वंदना के इन स्वरों में, एक स्वर मेरा मिला लो।
बन्दिनी माँ को न भूलो,
राग में जब मत्त झूलो,
अर्चना के रत्नकण में, एक कण मेरा मिला लो।'[११]

कवि यहाँ संसारजन्य राग की अपेक्षा बंदिनी माँ के प्रति राग को विशेष महत्व देते हैं। इसी भाव से प्रेरित होकर वे तरुणों को युगीन परिस्थितियों में सांसारिक राग को छोड़कर राष्ट्र के लिए चलनेवाले स्वाधीनता आंदोलन में सम्मिलित हो जाने का आह्वान करते हैं जिसे परवर्ती पृष्ठों में लक्ष्य किया जायगा। 'पूजागीत' में कवि ने माँ भारती के प्रति श्रद्धा एवं प्रेम से सम्बंधित अनेक रागात्मक चित्र अंकित किये हैं। उदाहरणार्थ इन्हें प्रस्तुत कियाजाता है। यथा-

इतना आज करो।
दो क्षण दो माँ के वंदन में,
दो कण दो माँ के अर्पन में,
\+ \+
दो पग बढ़ो मातृ-मंदिर में
दो डग आओ, मातृ-अजिर में,

दो नयनों में व्यथित वंदिनी
के दो अश्रु भरो ।
इतना आज करो ।'[१२]

और-'इतना मान रखो ।
अब तक भूले रहे देश को,
जननी के प्राणांत व क्लेश को,
आज निहारो उसे नयन भर,
दर्शन सुधा चखो ।'[१३]

माँ के प्रति भक्ति-भाव के कारण उनकी नीराजना के लिए देशवासियों को मातृ-मंदिर में निमंत्रित किया गया है -

'मातृ-मंदिर में चलो, प्रिय,
हो रही है आरती ।
अजिर में हो आज वन्दन,
अचिर माँ के कटे बन्धन,
कोटि कंठों में बजें, रणवाद्य,
बलि की भारती,
मातृ-मंदिर में चलो, प्रिय,
हो रही है आरती ।'[१४]

माँ के प्रति श्रद्धा एवं प्रेम के भाव उत्पन्न होने पर जो रागात्मक सम्बंध स्थापित होता है उससे व्यक्ति में उसके लिए त्याग की भावना का उदय होता है । कवि मां भारती की वर्तमानकालीन दयनीय स्थिति से अत्यधिक दु:खी हैं और उसकी पीड़ा, उसके बंधन आदि को दूर कर उसके पूर्वकालीन दिव्य रूप में उसे स्थापित देखना चाहते हैं । देशवासियों में भी उसी भाव को निष्पन्न करने के लिए कवि पराधीनकालीन मां भारती के कलुष पूर्ण चित्रों को भी अंकित करते हैं । ऐसा करने से कवि को विश्वास है कि देशवासियों की चेतना जागृत हो जायगी और उसके

हर प्रकार के दु:खों को दूर करने के लिए वे तत्पर हो जायेंगे । यथा-

'शक्ति की दात्री । तुम्हीं हो
शक्ति की ही याचिनी ?
अन्नपूर्णे । तुम क्षुधित हो ?
फिर न क्यों मानस मथित हो ?
देवि । यह दुर्देव कैसा ?
आज तुम रजवासिनी ।
स्तन्य पयमयि । अमृत स्राविनि ।
जननि । उठ ओ जन्मदायिनी ।
कोटि-कोटि सपूत तेरे
तू नहीं हतभागिनी ।'[१५]

माँ को यह विश्वास दिलाया गया है कि तेरी इस दुर्दशा के कारण तुम्हें निराश नहीं होना है, कोटि-कोटि तेरे सपूत तेरी इस याचनापूर्ण स्थिति से तुम्हें मुक्त कर देंगे । इसी विश्वास से वे देशवासियों को उत्प्रेरित करते हुए कहते हैं -

'ज्योति भरो, शक्ति भरो,
भक्ति भरो है ।
उर में हो नई स्फूर्ति,
युग युग की मिले पूर्ति,
मन में हो मातृ-मूर्ति,
पाप हरो, ताप हरो,
शाप हरो है ।'[१६]

वस्तुत: माँ के दु:ख को दूर कर देना सरल कार्य नहीं है । इस अति विकट कार्य को सम्पन्न करने के लिए कवि धैर्य दिलाते हुए कहते हैं -

'डिग न रे मन ।

आज आर्त विषण्ण दीना,

मातृ-मुख है कान्ति क्षीणा,

अन्न धन सर्वस्व हीना ।

पूत । आज सपूत बन तू

पोंछ रे माँ के नयन कण ।

डिग न रे मन ।'[१७]

माँ की असहाय एवं दीनतापूर्ण स्थिति को दूर करने के लिए राष्ट्र को उत्साह तो प्रदान करते हैं किन्तु यह भी अनुरोध करते हैं कि यदि तुम माँ का दुःख दूर न कर सको तो तुम्हें जीने का कोई अधिकार नहीं है । तुम्हें गरल पान कर लेना चाहिए -

'जननी आज अर्ध-क्षत-पसवा ।

खुलती नहीं तुम्हारी रसना ।

कोटि-कोटि तुम जिसके त्राता ।

क्षुधित -तृषित अ-वसन यह माता ।

अमृत दान दो अमृत-पुत्र हे ।

या ले गरल पियो ।'[१८]

माँ भारती का मानवीकरण करते हुए कवि स्वयं माँ के मुख से अपनी व्यथा को व्यंजित कराने का प्रयास करते हैं जो अनुकरणीय है । अपनी असह्य वेदना से व्यथित माँ देशवासियों से कहती हैं -

'सुन सकोगे क्या कभी

मेरी व्यथा की रागिनी ?

मैं अभागिनी भी बनूँगी

क्या कभी बड़भागिनी ?

तुम सभी मिलकर चलोगे,

युगों के बन्धन दलोगे,

फिर नहीं झनझन बजेगी
लौह की यह नागिनी ।[१९]

इस तरह द्विविध उपायों से कवि माँ के प्रति श्रद्धा एवं प्रेम का भाव उत्पन्न करते हुए राष्ट्रीय जागरण का सफल प्रयास करते हैं। इतना ही नहीं इसी भाव को अधिक दृढ़ीभूत करने के लिए अतीत का गौरव गान करने का भी यत्न करते हैं। अतीतकालीन कतिपय गौरवमय घटना-प्रसंगों का, महापुरुषों एवं लोकनेताओं का भव्य चित्र अंकित कर वे एक ऐसी तुलनात्मक स्थिति का निर्माण करते हैं कि जिससे वर्तमान का कालुषपूर्ण चित्र देशवासियों के सम्मुख गहराई के साथ उभर आये और उसे मिटाने के लिए उनमें स्वयं-स्फुरण हो जाय। अर्थात् उनकी भावचेतना सम्यक् - रूपेण जागृत हो जाय।

२- अतीत के प्रति गौरव की भावना :

सांस्कृतिक पुनर्जागरण आंदोलन पर आधारित राष्ट्र की चेतना को उजागर करने का प्रयास करते हुए आधुनिक हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा ने भारतेन्दु युग से लेकर जो अनवरत प्रयास किया है उसमें भारतीय अतीत के गौरव-गान की जो प्रवृत्ति प्रायः सभी कवियों में परिलक्षित होती है उसे द्वितीय अध्याय के अंतर्गत भलीभाँति लक्ष्य किया गया है। राष्ट्रीय जागरण के सशक्त प्रेरणा-स्रोत के रूप में इस परंपरा का निर्वाह द्विवेदी जी ने भी किया है। वस्तुतः जब तक लक्ष्य-प्राप्ति न हो तब तक निरन्तर चलनेवाली यह प्रक्रिया है। भारत जैसे विशाल राष्ट्र को जगाने का कार्य अति विकट है। व्यापक धरातल पर निरक्षरता, अज्ञान, प्रमाद, भय, आर्थिक विपन्नता, सामाजिक जड़-रूढ़ियाँ, अंधविश्वास तथा राजनीतिक अनभिज्ञता जैसे एकाधिक कारणों से उक्त कार्य विशेष कठिन एवं दुष्कर बन जाता है। फिर भी कवि ने इसे बड़े साहस, धैर्य तथा जिन्दादिली के साथ पूर्ण करने का यत्न किया है। भारत के अतीतकालीन वैभवपूर्ण इतिहास का स्मरण दिलाते हुए कवि कहते हैं -

"वह महिमामय अपना भारत
वह गरमामय सुन्दर स्वदेश।
युग-युग से जिसका उन्नत शिर
हैं किये खड़ा हिमगिरि नगेश।"[२०]

कवि भारतीय चिन्तन की प्राचीनकालीन भूमिका को प्रस्तुत करते हुए अपनी रचनाओं में त्याग से भोग की औपनिषदिक मान्यता को कहीं प्रकाशित करते हैं तो कहीं बुद्ध जी की करुणा की भावना से देशवासियों को संदेश ग्रहण कराते हैं। रामराज्य की स्थापना और कुरुक्षेत्र में 'गीता' के ज्ञान का स्मरण करते हुए वे संघर्ष का भी आह्वान करते हैं। यथा-

'भूल गये राम-राज्य वह
जहाँ सभी को सुख था अपना,
वे धन-धान्यपूर्ण गृह अपने
आज बना भोजन भी सपना,
भूल गये क्या कुरुक्षेत्र वह
जहाँ कृष्ण की गूँजी गीता,
जहाँ न्याय के लिए अचल हो
पाडु-पुत्र ने रण को जीता।'[२१]

इसके अतिरिक्त वे अतीतकालीन जन नायकों एवं युद्ध स्थलों का भी स्मरण करते हैं। 'हल्दीघाटी' एवं उनकी प्रसिद्ध रचना 'राणा प्रताप' वीरता एवं मातृभूमि के प्रति ममत्व का भाव भरती हैं। हिंसा रत संसार में करुणावतार बुद्ध की करुणा एवं अहिंसा के भावों को भरने के लिए प्रार्थना की जाती है तो संस्कृति के संरक्षक गोस्वामी तुलसीदास की सांस्कृतिक चेतना को पुन: राष्ट्र में उजागर करने का यत्न किया जाता है। यद्यपि उक्त दोनों काव्यों में दोनों महापुरुषों

एवं लोकनायकों का गौरवपूर्ण मन गान प्रस्तुत किया गया है तथापि उसी चेतना को भारत में पुन: स्थापित करने के उद्देश्य से उनका आह्वान भी किया गया है। कवि राजनीतिक जागरण के साथ-साथ सांस्कृतिक जागरण भी लाना चाहते हैं क्योंकि इसी के धरातल पर राष्ट्र-निर्माण का सशक्त भवन खड़ा किया जा सकता है। यद्यपि मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती' में अम अतीत का समग्र चित्र व्यापक धरातल पर चित्रित किया गया है जितना संभवत: द्विवेदी जी ने नहीं किया तथापि 'भारत-भारती' में अस अतीत के यथातथ्य चित्रों का मात्र अंकन करने की प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है। किन्तु द्विवेदी जी ने अतीत के चित्रों को उभारते हुए उन गौरवमय प्रसंगों एवं महापुरुषों की उस भव्य चेतना को पुन: लाने की आकांक्षा प्रस्तुत की है। तभी तो उन संस्कृति के प्रतिनिधियों का उस चेतना के साथ पुन: अवतरित होने के लिए आह्वान किया गया है।

'आओ फिर से करुणावतार।
मानव ने दानव धरा रूप
भर रहे रक्त से समयर कूप,
डूबती धरा को लो उबार
आओ फिर से करुणावतार।'[२२]

और- 'नव राष्ट्र जागरण के युग में
गूँजो तुलसी तुम धाम धाम।
गूँजो बापू के दृढ़ स्वर में
गूँजो गांधी की दृढ़ गति में।
दो नवचेतन, दो नवजीवन
दो संजीवन, दो देश भक्ति
दो नित्य सत्य हित लड़ने की
नस-नस प्राणों में आत्म शक्ति।'[२३]

वस्तुत: तुलसीदास जी का राष्ट्रीय जन-जागरण से कोई सम्बंध नहीं है। कम से कम गांधी निर्दिष्ट सत्य-अहिंसात्मक नीतियों से उनका कोई मेल नहीं बैठता। जैसा कि लक्ष्य किया गया, उनके युगव्यापी प्रभाव के आधार पर उनकी भारतीय संस्कृति के संरक्षक के नाते- राष्ट्रीय चेतना की जागृति में देन को महत्व दिया जा सकता है। गांधी जी के प्रति अपनी निष्ठा के कारण तथा उनके युगचेता व्यक्तित्व को लक्ष्य करके तुलसी की चेतना के सशक्त संवाहक के रूप में उन्हें पसंद किया गया है। अर्थात् आधुनिक युग में बापू ही उन महापुरुषों एवं लोकनेताओं की चेतना के निर्वहण के सशक्त माध्यम हैं। कवि का इस दिशा में नूतन प्रयोग-सा लगता है जो प्रशंसनीय है।

वर्तमान स्थिति के प्रति संवेदना और देशवासियों का आह्वान :

देश के उज्ज्वल अतीत के प्रति गौरव-गान से ही राष्ट्रीय जागरण का अनुष्ठान पूरा नहीं किया जा सकता है। प्रत्येक चिंतक या युग-द्रष्टा के लिए यह आवश्यक है कि वह वर्तमान के यथार्थ की भूमि पर स्थित होकर उस पर विचार करे। उज्ज्वल अतीत के प्रति गौरव का अनुभव मात्र उक्त जागरण को एकांगी ही नहीं बनाता, अपितु मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जनसाधारण को हताश एवं निराश बना सकता है। अतीत एवं वर्तमान को साथ में रखकर उसका तुलनात्मक अध्ययन करने से अतीत से प्रेरणा प्राप्त कर वर्तमान की विपन्न दशा में आवश्यक परिवर्तन लाना ही लक्ष्य होता है। अत: संभवत: उक्त तथ्य को लक्ष्य करके कवि का ध्यान वस्तुस्थिति की ओर भी गया है।

ब्रिटिश शासकों ने तो भारत को इस हद तक लूटने और बरबाद करने का प्रयास किया है कि धन-धान्य सम्पन्न देश आज कंगाल हो गया है। मानव के पास न खाने को अन्न है, न पहनने को वस्त्र। दुर्गन्धित, फटे चीथड़ों से अपनी लाज

समेटे उस मानव कंकाल का कवि कितना सटीक चित्र अंकित करते हैं -

'वह मानव कंकाल खड़ा है
फटे चीथड़े देह लपेटे,
दुर्गन्धित, जर्जर टुकड़े से
मानव पन की लाज समेटे ।'[२४]

कवि को विश्वास है कि इन त्रासित व पीड़ित मानव की मौन कहानी एक दिन साम्राज्यवादियों की प्रभुसत्ता को भस्मीभूत करके रहेगी -

'निखिल सृष्टि को भस्म करेगी
इन त्रसितों की मौन कहानी
तुम कहते हो गीत सुनाऊँ
आज रुद्ध है मेरी वाणी ।'[२५]

माँ भारती की वर्तमान स्थिति से विचलित कवि-मानस क्षुब्ध है । यह कैसा दुर्दैव है कि अतीत में जो कभी राजराजेश्वरी और धन-धान्य सम्पन्न थी वह आज भिखारिणी बन गई है -

'है फटा अंचल लहरता,
बन दरिद्र-ध्वजा फहरता,
रत्न आभरणे । बनी तुम
आज पंथ भिखारिणी ।'[२६]

इसके अतिरिक्त 'जननी आज अर्ध-दा त-वसना', 'वंदिनी तव वंदना में कौन सा मैं गीत गाऊँ ?', 'जाग माँ ओ जगद्धात्री', 'रही पहले की न गरिमा बंधनों में बंधी प्रतिमा', 'सुन सकोगे क्या कभी मेरी व्यथा की रागिनी ?' 'कोटि-कोटि तुम

जिसके त्राता`, `तुम सभी मिलकर चलोगे` इत्यादि अनेक रचनाओं में हमें वर्तमान-विषम स्थितियों का विषाद चित्रण मिलता है । इनमें कवि की वर्तमान दयनीय स्थिति के प्रति दुःखद संवेदना ही प्रकट नहीं होती अपितु राष्ट्र के कण- कण के प्रति उनका सच्चा प्रेम भी व्यक्त होता है ।

उक्त वर्तमान स्थिति को देखकर व्यथित एवं विचलित कवि उसके शीघ्र ही उपाय के लिए देशवासियों का विशेषकर तरुणों का आह्वान करते हैं क्योंकि उन्हें विश्वास है कि तरुण जो देश का सच्चा धन है और जो आवश्यक क्रांति उत्पन्न कर सकता है, उसके कृत-संकल्प हो जाने पर न केवल स्वाधीनता की प्राप्ति हो सकती है अपितु राष्ट्र-निर्माण का विकट कार्य भी उसी के द्वारा सम्पन्न किया जा सकता है ।

देशवासियों का आह्वान :

अज्ञानांधकार में प्रमादग्रस्त राष्ट्र के तरुणों से उद्बोधन करते हुए कवि करते हैं,

`किस सुख की निद्रा में सोये
तम का अंचल तान
जागो, वैभव लुटा तुम्हारा
जागो हुआ विहान ।`[२७]

हे आर्य सन्तान ! समूचा राष्ट्र तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है । तुम जैसे वीर युवकों की उपस्थिति में राष्ट्र विवश और परवश बनकर पड़ा रहे यह कहां का न्याय है ? तरुण को अपनी जवानी की शपथ दिलाते हुए कवि कहते हैं -

`तू रहे औ हो जवानी
देश हो लाचार ।
तो तुझे तेरी जवानी पर, अरे धिक्कार`।[२८]

जिस तरह समुद्रोल्लंघन के अति विकट कार्य को संपन्न करने के लिए नैराश्य-पूर्ण हनुमान को उनकी विराट शक्ति का स्मरण दिलाया गया, उसी तरह तरुण को उसकी प्रलयंकर शंकर की-सी अपरिमित शक्ति का स्मरण कराते हुए कवि कहते हैं,

'जाग नवयुग के विधाता ।
दीन दुर्बल दलित त्राता ।
जाग प्रलयंकर भयंकर !
जाग त्रिनयन ! जाग शंकर ।'[२९]

उसके अतुलित शक्ति-सम्पन्न बाहुबल का स्मरण दिलाते हुए कवि कहते हैं, 'तेरी जागृत प्रचंड शक्ति के सम्मुख समस्त विश्व तेरे चरणों में झुक जायेगा । यथा -

'महाकालकी प्रलय रात्रि में
तांडव कर रे एकाकी,
तेरी शक्ति, भक्ति भर दे,
नत जग, तेरी जय जय बोले ।'[३०]

देखो, चतुर्दिक जागरण युक्त क्रांति की जो लपटें फैल रही हैं, उनमें निर्भीकता के साथ अपना स्वर मिलाते हुए संलग्न हो जाओ,

'बच न सकोगे इन लपटों से,
महाकालकी इन झपटों से,
अत्याचार छद्म कपटों से,
मुड़ो न भव के अथ पर
+ + +
बढ़ो मृत्यु को मथकर ।'[३१]

महाप्राण निराला कृत `जागो फिर एक बार` काव्य की ये पंक्तियाँ -

शेरों की मांद में
आया है आज स्यार ।`[32]

द्विवेदी जी की इन पंक्तियों के साथ भलीभाँति संतुलित की जा सकती हैं -

`विसुध दुर्बल है विवश है ?
केसरी होकर अवश है ?
जाग । भर हुंकार, कड़ियाँ
छिन्न हों अवशेष
जाग । सोये देश ।`[33]

इन पंक्तियों में जो गति, लय एवं भावात्मक तीव्रता दृष्टिगत होती है वह अनुपम है । दोनों कवियों की पंक्तियों में जागरण का प्रयास अवश्य पाया जाता है, तथापि द्विवेदी जी की पंक्ति तयों में जागरण के उद्देश्य का भी सविशेष उल्लेख पाया जाता है । इसके अतिरिक्त कवि समस्त राष्ट्र को प्रबुद्ध करने की जो चेष्टा करते हैं उसमें `सुना रहा हूँ तुम्हें भैरवी, जागो मेरे सोनेवाले` कविता इसका सशक्त प्रमाणप्रस्तुत करती है ।

हृदय की मुक्तावस्था ही सच्ची स्वतंत्रता है । ऐसा मुक्त युवक ही माँ भारती की मुक्ति के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा सकता है । कवि की निजी मान्यता है कि इसके बिना भारतमाता की मुक्ति संभव नहीं है । यतीन्द्रनाथ दास के राष्ट्रीय शहीद हो जाने पर श्रद्धांजलि के रूप में रचित `फूलों भरा जनाजा` कविता में कवि उसे प्रस्तुत करता हुआ क्रांति का अभिनंदन करता है ।

जन जागरण के इस युग में कवि ने केवल देश के तरुणों को जगाने की चेष्टा करते हैं अपितु समस्त देशवासियों को जगाते हैं । कवि होने के नाते वे कवि के दायित्व को भलीभाँति समझते हैं । वस्तुत: कवि ही नवयुग के स स्पंदनों के संग्राहक एवं संप्रेषक केन्द्र हैं जिनकी शक्ति एवं भक्ति के द्वारा राष्ट्रीय चेतना

उद्बुद्ध तो होती ही है किन्तु साथ ही नवयुग की स्थापना में उसका महत्वपूर्ण योगदान भी होता है। तदर्थ वे प्रत्येक कवि को जगाने की चेष्टा करते हैं। साथ ही उसे अपने दायित्व का स्मरण दिलाते हुए वैभव-वंदना की परंपरा का परित्याग कर, उन नंगे-भूखे, प्यासे, शोषित करोड़ों असहाय लोगों का अभय गायक बनने को उपदिष्ट भी करते हैं। यथा-

'ओ नवयुग के कवि जाग जाग।
वैभव वंदन में हुए लीन,
महलों को तज झोंपड़ियों में
कब उनके मन की बजी बीन ?
यह गुरु कलंक का पंक मेट
बनकर शोषित का अभय गान
नंगा भूखा प्यासा समाज
देखता राह तेरी महान।
नव जीवन के रवि जाग जाग।[34]

हे युगगायक। तेरे गीतों के प्रभाव से राष्ट्र में महाक्रांति की ज्वालाएं फैलेंगी जिनमें युगीन प्रसाद, रूढ़ियां, अंधविश्वास आदि के अतिरिक्त शासकों के अन्याय एवं अत्याचार के बितान भी भस्मीभूत हो जायेंगे।

'गाओ मेरे युग के गायक
यह महाक्रांति का अभयगान
झुलसें जिसकी ज्वालाओं में
अगणित अन्यायों के वितान।
रूढ़ियां अंधविश्वास घोर
जड़ जीवन का रे तिमिर चीर

आलोक सत्य का फैला दे
बह चले मुक्त जीवन समीर
ओ नव बलि की छवि । जाग जाग ।'[35]

हम देख आये हैं कि गांधी जी ने साम्राज्यवादी ब्रिटिश शासकों का प्रतिकार, परंपरा प्राप्त उन हिंसक शस्त्रों के द्वारा न करके सत्य और अहिंसा के शस्त्रों का उनके नव्यतम परिप्रेक्ष्य में उपयोग करते हुए, करना पसंद किया है । गांधीवादी द्विवेदी जी भी उक्त पंक्तियों में अहिंसात्मक प्रतिकार में आस्था रखते हुए समकालीन कवियों को उसी मार्ग का अनुसरण करने को उपदिष्ट करते दृष्टिगत होते हैं । वे जानते हैं कि जितनी उमंग कवि के मानस में होगी, देश के लिए स्वार्पण की जितनी बलवती तमन्ना कवि के भावाकुल चिंतन में होगी देशवासियों में भी उसके उतने ही अनुपात में उमंग उठेगी । तदर्थ वे अपने मानस की उमंग को संबोधित करते हुए कहते हैं -

'उठ उठ री मानस की तरंग
लय हों अग जग के रंग ढंग
+ +
प्रण में भरने की जगा साख,
रण में मरकर मैं बनूँ राख
उठ पड़ें राख से लाख लाख
शर से भरकर खाली निषंग ।
उठ उठ री मानस की उमंग ।'[36]

कवि की तरह कविता में भी दिशा- परिवर्तन करने की अद्भुत क्षमता है । इसका कारण यह ज्ञात होता है कि द्विवेदी जी कविता के लोककल्याण कर प्रयोजन को स्वीकार करते हैं और उसे मानवता के संरक्षक, उमंग-उल्लास भरी चेतना तथा

समाज के प्रति दायित्व अनुभव से प्रेरित मानते हैं । स्वयं कवि के शब्दों में -

'तुम जगद्धात्रि ! जग कल्याणी !
तुम महाशक्ति सोचो क्या हो,
कविते ! केवल तुम नहीं अश्रु
जीवन में जय की आत्मा हो ।

तुम कर्मगान गाओ जननी
तुम धर्मगान गाओ धन्ये !
तुम राष्ट्र धर्म की दीक्षा दो
तुम करो राष्ट्र रक्षण पुण्ये !'[३७]

अन्य राष्ट्रीय कवियों की तरह राष्ट्रीय जागरण के द्वारा वर्तमान कलुषपूर्ण विभीषिकाओं को दूर करने के लिए द्विवेदी जी ने भी सशक्त प्रयास किया है । किन्तु इसके अतिरिक्त उन्हें दूर करके उसके स्थान पर क्या रखा जाय यह भी कवि ने सोचा है । अर्थात् आशा, आस्था एवं निर्माण के कवि द्विवेदी जी ने राष्ट्र-निर्माण के संदर्भ में कविता का क्या दायित्व है और उसे क्या करना चाहिए उसका स्पष्ट निर्देश भी उक्त पंक्तियों में मिलता है । इससे सिद्ध होता है कि कवि केवल निषेधात्मक चिन्तन ही नहीं, प्रषेधात्मक चिन्तन भी करता है । ऐसे अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं । माँ सरस्वती की वंदना में एक ओर कवि उससे भी जन-जागरण की अपेक्षा रखते हैं [३८] तो दूसरी ओर नूतन वर्ष के स्वागत में भी यही जागरण एवं निर्माणमूलक आकांक्षा प्रतिबंधित होती है ।[३९]

कवि की मान्यता है कि बिना जन जागरण के क्रांति संभव नहीं है और बिना क्रांति के परिवर्तन और प्रवर्तन संभव नहीं है । जब कभी जिस किसी समाज या

जाति में क्रांति का आगमन होता है तब जो भी जीर्ण-पुरातन होता है, उसका विध्वंस अवश्यंभावी होता है। उसके आगमन पर सर्वत्र उथल-पुथल हो जाती है। उसके आगमन पर कहां, कैसे परिवर्तन होते हैं उसका सुन्दर चित्र 'क्रांतिकुमारी' काव्य के अंतर्गत कवि ने इस तरह खींचा है -

'तोड़ती नियम की धारायें,
फोड़ती किले की कारायें,
+ + +
निर्बल के कर की ढाल बनी
निर्धन के कर करवाल बनी,
धन-दर्पित, उद्धत क्रूर कुटिल
कामी प्राणों का काल बनी,
युग-युग के गौरव छत्र-मुकुट में
बढ़-बढ़ आग लगाती हूँ।
जब आती हूँ।'[४०]

और- 'विद्रोह भ्रांति विप्लव अशान्ति
उत्पात अराजकता भरती,
मैं सप्तसिंधु खौला करके
भू अंबर सभी एक करती,
फूँकती जागरण शंख, पंख में
बंधे हुए खुलवाती हूँ।
जब आती हूँ।'[४१]

महात्मा गांधी ने जन-जागरण के भगीरथ कार्य के निमित्त भारत भ्रमण करते हुए जिस किसी गांव या शहर में निवास किया वहां ब्रह्म मुहूर्त में उठकर अपने सत्याग्रही सेनानियों के साथ प्रभात फेरी करने का नियम-सा बना लिया था।

जन-जागरण का यह सबलतम उपाय है। कवि ने इस स्थिति का यथोचित लाभ उठाते हुए युगीन आवश्यकताओं के अनुकूल कतिपय अभियान गीतों का सर्जन किया है। संक्षेप में ये गीत इस प्रकार हैं - `उठो बढ़ो आगे स्वतंत्रता का स्वागत सम्मान करो`, `न हाथ एक शस्त्र हो बढ़े चलो , बढ़े चलो`, `चल रे चल अडिग अचल`, `जय राष्ट्रीय निशान` इत्यादि। ये ही वे गीत हैं जिन्हें गाते हुए सत्याग्रही सेनानी प्रभातफेरी किया करते थे। इन गीतों में कविता के साथ-साथ संगीतात्मकता होने के कारण सत्याग्रहियों को जो भावात्मक एकता की अनुभूति होती थी , उसके परिणाम स्वरूप जागरण का सुंदर वातावरण निर्मित होता था। इन गीतों का अन्यत्र प्रयाण गीतों(March Song) के रूप में भी उपयोग होता रहा है। इन गीतों के द्वारा जन-समाज में जन-जागरण का अच्छा वातावरण पनप रहा था। अर्थात् नवयुवकों में साहस और उमंग भरने के लिए इन गीतों का अपूर्व योगदान रहा है।

राष्ट्र के प्रति निजी कर्तव्य का भान :

उक्त दोनों प्रकार के माध्यमों के द्वारा राष्ट्र के तरुण के मानस में राष्ट्र के प्रति रागात्मक भाव को जागृत करने का प्रयत्न करने के उपरान्त कवि तरुणों को अपने कर्तव्य का भान कराने का भी यत्न करते हैं। वस्तुत: कर्तव्य-प्रेरणा के लिए वस्तुस्थिति का भान कराना आवश्यक समझकर द्विवेदी जी ने अपनी कविता में इस पक्ष को सम्मिलित किया है। जो युवक वैभव-विलास और राग-रंग मुक्त जीवन दृष्टि बदलकर मां की मुक्ति के यज्ञ में अपनी आहुति देने के कार्य में संलग्न हो जाने का संकल्प करता है, उसकी उमंग को टिकाये रखने के हेतु उसे उचित दिशा-दर्शन करते हुए कवि कहते हैं -

`जिसने तुम्हें दिया यह जीवन,
किया उसे तुमने क्या अर्पण ?

उऋण हुआ क्या माँ के ऋण से ?
अपनी कीर्ति लखो ।
इतना मान रखो ।'[४२]

आर्त, विषण्ण एवं कांतिहीन मातृ-मुख की प्रसन्नता के लिए सधैर्य उसके नयनाश्रु पोंछने चाहिए । मां के कमल-कोमल करों में वज्र-कठोर लोह-शृंखलाएं पड़ी हुई हैं । अपने वीरत्व का प्रबलेश प्रदर्शन कर सिसकती हुई उस मां की लोक-कड़ियों को विच्छिन्न करने का उत्साह प्रदान करते हुए कवि उसे कहते हैं -

'कसकती हैं क्रूर कड़ियाँ,
सिसकती हैं प्रहर घड़ियाँ,
तोड़दे रे लोह-लड़ियाँ
पुरुष ! तव पुरुषत्व पर
है बज रही जंजीर भनभन ।
डिग न रे मन !'[४३]

वर्तमान विषम परिस्थितियों के सर्वत्र विवादी स्वर बज रहे हैं । ऐसी अवस्था में अपना स्वर मंद किये बिना तथा अपने कर्तव्य-पथ पर अटल रहते हुए मां की मुक्ति के अतिरिक्त राष्ट्र के शोषित एवं पीड़ित वर्ग के उद्धार के लिए भी तत्पर रहना चाहिए । इस सविशेष कार्य के प्रति उसका ध्यान आकर्षित करते हुए कवि कहते हैं -

शोषित पीड़ित जन के नायक,
नवयुग, नवजग, राष्ट्र विधायक,
महामुक्ति के कर्मठ गायक !
नव अरुणोदय है !
जय जय निर्भय है !'[४४]

निर्भय विचरण के साथ-साथ कवि उसे सावधान भी करते हैं कि अपने कर्तव्य का पालन करते समय कहीं सशस्त्र क्रांति का सहारा न लेना। तुम्हें गांधी निर्दिष्ट मार्ग का भलीभांति अनुसरण करना चाहिए क्योंकि यही एकमात्र मार्ग है जो क्रांति में भी सात्विक आनंद की अनुभूति कराता है -

'बढ़ उधर, हो जिधर आँधी,
चढ़ उधर, हो जिधर गाँधी
बंदिनी के मुक्ति- पथ की
यातना आनंदकर है।'[४५]

इस तरह कवि देश के नवयुवकों को लक्ष्य-पूर्ति के उद्देश्य से सोत्साह कर्तव्य-पथ पर अग्रसर होते हुए दो प्रकार के कार्य का निर्देश करते हैं। एक ओर मां की मुक्ति का कार्य है, तो दूसरी ओर शोषित, पीड़ित जन-समाज के उन्नयन का कार्य। किन्तु उक्त कार्य की पूर्ति के लिए अंधाधुंध केवल विप्लववादी स्वर एवं शक्ति लिए उसे कार्य नहीं करना है यह भी संकेत कर देते हैं। कवि के विचार से गांधी-निर्दिष्ट अहिंसात्मक सत्याग्रहों में उमंग के साथ सम्मिलित हो जाने पर उक्त द्विविध लक्ष्यों की पूर्ति हो जायगी। तदर्थ वे तरुण को उसी मार्ग का अनुसरण करने को उपदिष्ट कर रहे हैं।

स्वतंत्रता-सेनानियों के प्रति सम्मान का भाव :

स्वतंत्रता के पुनीत यज्ञ में आत्म समर्पण की बबलत बलवती भावना से संलग्न होनेवाले सेनानियों का उचित स्वागत सम्मान व न केवल उनके मानस में उत्साह व उमंग भर देता है अपितु राष्ट्र में एक प्रकार से जागरण का वातावरण भी उत्पन्न करता है। इस मनोवैज्ञानिक तथ्य से प्रेरित होकर कवि ने उन सेनानियों के स्वागत में कहा है -

'किस तरह स्वागत करूँ ? आ लाड़ले ।
चाहता जी, चरण तेरे चूम लूँ ।'[४६]

और- 'लाल यदि तुमसे मिलें जिस देश को
क्यों सहेगा वह किसी भी क्लेश को ?
भक्त बनकर वारता है प्राण जो
मानकर भगवान ही निज देश को ।'[४७]

तथा- 'स्वागत ! आज प्रवासी !
पाकर तुम से ही नर-नाहर,
गिरे राष्ट्र उठते फिर ऊपर,
हम मृतकों में जागे जीवन
औ बलि के अभ्यासी ।
स्वागत ! आज प्रवासी !'[४८]

५-स्वतंत्रता आंदोलन के इतर संदर्भ :

लक्ष्य प्राप्ति की प्रेरणा :- पूर्ववर्ती पृष्ठों के विवेचन के अंतर्गत राष्ट्रीय आंदोलन कालीन जन जागरण के संदर्भ में कवि के विचारों से अवगत होने पर यहां जागृत नवयुवकों को स्वाधीनता प्राप्ति के लक्ष्य की पूर्ति करने के लिए कवि ने अपने उत्साह और उमंगपूर्ण चेतना- प्रवाह को निरन्तर बनाये रखने के उद्देश्य से जो प्रयास किया है वह इस प्रकार है । अपने प्रण पर अटल रहने का संदेश देते हुए वे कहते हैं -

'जब तक एक रक्तकण तन में
पिछे हटो न तिल भर प्रण में ।'[४९]

लक्ष्य से व्यक्ति प्राय: विचलित होता है या उसका विस्मरण कर देता है । इसके लिए आवश्यक है कि उसका बारम्बार स्मरण कराया जाय ।साथ ही

जीवन के आकर्षणों और निजी समस्याओं में पड़े हुए व्यक्ति को राष्ट्रीय जागरण के प्रति जागरूक रखने के लिए भौतिक सुख-साधनों की अपेक्षा उस लक्ष्य पूर्ति के लिए सजग करना भी आवश्यक है । कवि ने इस दायित्व का सम्यक् निर्वाह किया है -

'भूले रहे कनक काया में
यौवन की मादक माया में,
जीवन के दो चार पलक तो
एक करके परखो ।
इतना मान रखो ।'[५०]

और- 'तुम उस राह न जाओ
जो जाती वैभव के गृह में
बनो ग्रास के दास नहीं तुम
भले त्रास पाओ ।'[५१]

सांसारिक मोह-माया और राग की अपेक्षा मातृभूमि के प्रति अनुराग को प्राधान्य देते हुए कवि तरुण को यह भी कह देते हैं कि एक बार यदि अपनी प्रियतमा रूठ जाती हो तो भी उसकी परवाह किये बिना राष्ट्र की मुक्ति के इस लक्ष्य के लिए निकल पड़ो-

'रहे रूठी राधिका मत रुको,
मत उसको मनाओ,
देखती अपलक तुम्हें जो
लाज तुम उसकी बचाओ ।
द्रौपदी नंगी उघारी
नयन से जलधार जारी ।'[५२]

और- 'आज इस रण की घड़ी में
यह सुभग शृंगार कैसा ?

इस प्रलय के काल में
यह प्रणय का अभिसार कैसा ?
आज चल उस ओर - है
जिस ओर बलि चढ़ती जवानी ।'[५३]

अपनी तरुणाई की शपथ दिलाते हुए उसे यह कहा जाता है कि कायरता से अपने जीवन को कलंकित किये बिना एक वीर की मौत मरना पसंद करना । किंतु ब्रिटिश शासकों के द्वारा निर्मित बरबादी की आग को बुझा कर ही रहना । यथा-

'तुझे शपथ है आजादी की
ओ जाँबाज जवाँ मेरे ।
बुझा आग बरबादी की
जो है तेरे घर को घेरे ।'[५४]

और- 'तरुणाई का आज तकाजा
मृत्यु मिले या जीवन हो,
कायरता से किन्तु कलंकित
कभी न अपना जीवन हो ।'[५५]

साथ ही उसे सावधान करते हुए यह भी कहा गया है कि लक्ष्य प्राप्ति की धुन में अपनी अतुलित शक्ति का 'शठं प्रति शाठ्यं कुर्यात्' के न्याय से हिंसात्मक प्रहार न करना । गांधी निर्दिष्ट अहिंसात्मक मार्ग का अनुसरण करते हुए त्याग एवं बलिदान की भावप्रवण आधारशिला पर अटल रहकर कार्य करने की प्रेरणा देते हुए कवि कहते हैं -

'आज तुम किस ओर ?
उधर युग-शासक, इधर
युग-युग दलित जनरोर ।
इधर सब ~~निःसत्त्व~~ निःशस्त्र
शस्त्रों का उधर रव घोर ।

आज बल की ओर तुम
या, आज बलि की ओर ?
आज तुम किस ओर ?'[५६]

उक्त पंक्तियों में नवयुवक की मन:स्थिति को ही परखने का प्रयास किया गया है किन्तु निम्न पंक्तियों में तो कवि उसे अहिंसात्मक मार्ग का ही वरण करने को उपदिष्ट करते हैं -

'आज है रण का निमंत्रण ।
आज है दिन साधना का,
राष्ट्र की आराधना का,
वैदिकी होगी न हिंसा
आज का व्रत है अहिंसा,
स्वत्व लो, अस्तित्व देकर,
पियो नव अमरत्व के कण ।
आज है रण का निमंत्रण ।'[५७]

अहिंसात्मक प्रतिकार का मार्ग कायरता का मार्ग नहीं है । वस्तुत: हिंसात्मक प्रतिकार ही कायरता का मार्ग है क्योंकि जिसे अपनी आत्म शक्ति पर विश्वास नहीं होता, वही शस्त्रों की शरण में जाता है । शस्त्र जड़ है, जागृत आत्मशक्ति, चैतन्य का प्रतीक है । तदर्थ शस्त्र का नहीं, शस्त्र-चालक का मूल्य अधिक है । मनुष्य जितना चिरंतन मानवीय-मूल्यों का अनुसरण करता हुआ अपनी दानवीय हीन-चित्तवृत्तियों का विवेकपूर्ण निरोध कर पायेगा, उतना ही वह विश्व के इतिहास में अजर-अमर हो जायेगा । सृष्टि के इस महत्वपूर्ण तथ्य का परिपालन ही नवयुवक का लक्ष्य होना चाहिए । यह मार्ग कठिन अवश्य है, इसमें एकाधिक यातनाएं सहन करनी पड़ती हैं किन्तु फिर भी ये यातनाएं अपनी विवेक बुद्धि से सही जाती हैं,

तदर्थ ये क्लेशमय नहीं होतीं, आनन्द प्रदायक हुआ करती हैं। यथा-

'बढ़ उधर हो जिधर आँधी,
चढ़ उधर हो जिधर गाँधी
वन्दिनी के मुक्ति-पथ की
यातना आनन्दकर है।' ५८

उक्त अहिंसात्मक मार्ग का अनुसरण करते हुए यदि दुर्दिनों में उसके सभी साथी छोड़कर चले जांय तो भी उसे चिरन्तन आशा के साथ उस मार्ग में अटल रहना चाहिए किन्तु कभी भी हिंसा का मार्ग नहीं लेना चाहिए। यथा-

'द्वार रुद्ध हो, घोर निराशा,
त्याग नहीं मन की चिर आशा,
विमुख लौटकर भी न कभी भी,
कर विश्वास विनाश राही।
फिर भी न हो निराश राही।' ५६

इस तरह तरुण को निर्णयात्मक मन: स्थिति में लाकर उसे राष्ट्र के आंदोलन में सम्मिलित होते दिखाया गया है। यथा-

'प्राण! दो तुम भाल चंदन,
विदा दो हो मातृ-वंदन,
शक्ति दो तुम भक्ति जागे,
मुक्ति-पथ पर शिर चढ़ाऊँ।
आज रण की ओर जाऊँ।' ६०
वैरि को होगी न हिंसा
आज का व्रत है अहिंसा,

६- जागरण के संदर्भ में कवि की अनुभूति :

नवयुवक को बलवती प्रेरणा का निरंतर संबल देने के कारण अब कवि को विश्वास हो रहा है कि वास्तव में देश में जन-जागरण पर्याप्त मात्रा में हो गया है । पराधीन जनता के हृदय में आजादी की प्राप्ति के लिए उत्साह व उमंग की लहरें उठ खड़ी हुई हैं -

'कायर भी बढ़ते हैं रण में
वीर भाव का वह प्रभाव है ।
आज गुलामों के भी दिल में
उमड़े आजादी के शोले ।
आज जागरण है स्वदेश में । [६१]

हाथ में किसी भी प्रकार का हिंसक शस्त्र न होते हुए भी अहिंसात्मक प्रतिकार करने में कितना उत्साह दृष्टिगत होता है । आत्मत्याग की अमर भावना का समुद्र मानो उमड़ पड़ा है । 'मरण ही जीवन है' की अनुभूति करता हुआ व्यक्ति - बलिदानों की नींव बनने के लिए प्रतिस्पर्धी बना है । यथा-

'आज मरण में जीवन जगता,
यों तो जीवन बना भार है ।
बलिदानों की ईंट बनें हम
यह सबके मन की पुकार है ।
आत्म त्याग की आत्म भावना ने
मृतकों को अमृत पिलाया
आज जागरण है स्वदेश में
पलट रही है अपनी काया ।' [६२]

कवि को यह भी अनुभूति हो रही है कि चाहे संघर्षों में ही सही आज जन-जागरण के कारण राष्ट्र-निर्माण का कार्य हो रहा है। वर्षों की साधना के पश्चात् ही राष्ट्र-निर्माण-कार्य संभव हो सकता है। 'मरण को त्योहार' माननेवाले पराक्रमी पुरुषों के बलिदानों की अचल शिला पर ही राष्ट्रीय भवन का निर्माण होता है। यह सब तभी संभव होता है जब असह्य वेदना सहन करने के पश्चात् जन-शक्ति जागृत हो जाती है। यथा -

'साम्राज्यों की नींव कंप रही
कंपती राज्यों की प्राचीरें
जन-सत्ता जग पड़ी आज है
अब असह्य जनता की पीरें।
आज मातृ मंदिर उठता है
बलिदानों की अचल शिला पर,
तरल तिरंगा लहर रहा है
विजय है केतु बन सबके ऊपर।
आज राष्ट्र-निर्माण हो रहा
अपना शत-शत संघर्षों में।'[६३]

कवि बारम्बार जागृत जनता को स्मरण दिलाने की चेष्टा करते हैं कि गांधी जी के नेतृत्व में चलनेवाली क्रांति अहिंसात्मक क्रांति है और इसमें एकाधिक यातनाओं को पूर्ण साहसिकता एवं मानसिक प्रसन्नता के साथ सहन करना होता है। यह निर्दिष्ट किया गया है कि ये यातनाएं आनंदकर होती हैं क्योंकि इसमें आत्मा की प्रायः सभी दानवीय चित्तवृत्तियों पर विजय होती है। स्पष्ट है कि इसी कारण हिंसात्मक शस्त्रास्त्रों के द्वारा प्राप्त विजय की अपेक्षा अहिंसात्मक विजय अपेक्षाकृत अधिक मूल्यवान होती है। देश में चल रही ऐसी अहिंसात्मक क्रांति का प्रादुर्भाव तभी होता है जब प्रतिद्वंदी की ओर से भयंकर नर-संहार किया जाता हो।

कवि 'अहिंसा अवतरण' शीर्षक काव्य में कुछ ऐसी ही अभिव्यंजना करते हुए कहते हैं -

'तभी मैं लेती हूँ अवतार ।
महाक्रांति हुंकार लिए जब
करती नर-संहार,
रक्तधार में उतराने
लगता समस्त संसार,
सहम जाते हैं बुद्धि विचार,
तभी मैं लेती हूँ अवतार ।'[६४]

जब मानव शस्त्रास्त्र क्रांति से ऊब जाता है । परिस्थितियां उसकी बुद्धि एवं विचार के आयामों के बाहर चली जाती हैं, अर्थात् मानव जब स्वयं को असमर्थ अनुभव करने लगता है तभी अहिंसा का अवतरण होता है । मां जिस तरह अपने विरह संतप्त दुखी बालक को अपनी गोद में लेकर उसे वात्सल्य की अजस्रधारा में प्लावित कर शांति एवं आनंद प्रदान करती है, उसी तरह अहिंसा रूपी मां भी संतप्त और दुःखी लोगों को अपने शीतल अंचल में लेकर चंदन का (शान्ति का) अनुलेपन करती है जिससे उनका दुःख-दर्द, पीड़ा या वेदना तिरोहित हो जाती है । अहिंसा का मानवीकरण करते हुए कवि कहते हैं -

'मैं अपने शीतल अंचल में
लेकर जलता लोक,
चंदन का अनुलेपन करती
खिलते सुख के कोक,
न आती फिर दुःखभरी पुकार
कि जब मैं लेती हूँ अवतार ।'[६५]

७-राष्ट्रीय आंदोलन के सन्दर्भ :

द्विवेदी जी के व्यक्तित्व पर पड़नेवाले संस्कारों के विवरण के संदर्भ में विगत पृष्ठों में यह लक्ष्य किया गया है कि युग प्रवर्तक, युगचेता महात्मा गांधी के व्यक्तित्व का प्रभाव उनके विद्यार्थी काल से ही पड़ने लगा था। तत्युगीन प्रसिद्ध खादी अभियान पर आधारित कवि खादी गीत की रचना कर चुके थे। खादी में निहित संपूर्ण भावात्मक भूमिका को यह गीत प्रस्तुत करता है। उसके प्रत्येक धागे में मां-बहनों, भाई- बंधुओं, बाल-बच्चों सभी का प्यार तथा अपनत्व भरा हुआ है। यद्यपि खादी कोई शस्त्र नहीं है तथापि उसमें सज्ज सेनानियों को देखकर दुश्मन भयभीत हो जाता है। कवि को विश्वास है कि यही एक ऐसी संजीवनी है जो देशप्रेम का प्याला पिलाती हुई मुर्दों में नवजीवन का स्पंदन भर देती है और स्वाधीनता प्राप्ति का लक्ष्य भी इसी के माध्यम से सम्पन्न किया जा सकता है-

'खादी ही भर-भर देश प्रेम
का प्याला मधुर पिलायेगी।
खादी ही दे -दे संजीवन
मुर्दों को पुन: जिलायेगी।
खादी ही भाल से रूठी
आजादी को घर लावेगी।'[६६]

इस लम्बे गीत में गरीब किसान-मजदूर सभी के भावों को संजोया गया है। तदर्थ स्वयं गांधी जी पं० मालवीय जी अनेक नेताओं के अतिरिक्त सामान्य जनता ने भी उसे सहर्ष पसंद किया। उसके राष्ट्रव्यापी प्रचार-प्रसार तथा उसके युगीन प्रभाव को पूर्ववर्ती पृष्ठों में लक्ष्य किया जा चुका है। ~~निर्भि-चेतना~~

राष्ट्रीय जागरण के संदर्भ में कवि की निजी चेतना को पूर्ववर्ती पृष्ठों में भलीभांति प्रदर्शित किया गया है। किन्तु इसका श्रेय गांधी जी को प्रदान करते हुए कवि कहते हैं -

'किसने स्वदेश को युग-युग की
गहरी निद्रा से जगा दिया ?
किसने भारत की पल-पल की
आलसित तंद्रा को भगा दिया ?
        चल पड़ा कौन मरने मिटने
        लेकर कुछ वीरों की टोली
        सुलगा दी मग-मग पग-पग में
        किसने आजादी की होली ?
हमने तुमने सबने जिस पर
अपने सुख की आशा बाँधी,
अपनी यशुदा का मनमोहन
वह भारत का प्यारा गांधी ।' [६७]

मानव-मस्तिष्क में 'वैभव' के प्रति आकर्षण की अपेक्षा त्याग का भाव भरते हुए तथा साम्राज्यवादियों का गर्व-खंडन करते हुए आत्माहुति के महायज्ञ का परिपालन करने के सदाशय से बापू ही तो सबके आत्म बल को जगाने का यत्न करते हैं । कवि के अनुसार संशय और भय, जो व्यक्ति के विकास के लिए घातक तत्व हैं, उन्हें दूर करते हुए दृढ़मनस्कता के साथ बापू जिस दिशा में अपना चरण बढ़ाते हैं, करोड़ो चरण उसी दिशा में तीव्र आतुरता के साथ बढ़ जाते हैं । इस भाव को 'चल पड़े जिधर दो डग मग में, चल पड़े कोटि पग उसी ओर' काव्य में भलीभांति लक्ष्य कियाजा सकता है । लोकनायक गांधी के व्यक्तित्व के प्रति इस तरह समस्त राष्ट्र का प्रभावित होना और अविलंब उनका अनुसरण करना उनके युगीन अद्वितीय प्रभाव का परिचायक है । कवि भी उस युगपुरुष के युगीन प्रभाव से प्रभावित ही नहीं अभिभूत हैं, इसका प्रमाण निम्न पंक्तियों में मिल जाता है -

युग परिवर्तक, युग संस्थापक,
युग संचालक है युगाधार !
युग निर्माता, युग मूर्ति ! तुम्हें
युग-युग तक युग का नमस्कार ।' ६८

और- 'हे कोटिचरण, हे कोटि बाहु !
हे कोटि रूप, हे कोटि नाम !
तुम एक मूर्ति, प्रतिमूर्ति कोटि
हे कोटिमूर्ति तुमको प्रणाम् !' ६९

उक्त पंक्तियों में कवि बापू के युगीन प्रभाव को तो व्यंजित करते ही हैं, किन्तु साथ ही बापू के प्रति उनकी अदम्य श्रद्धा-भक्ति भी व्यंजित होती है । उनका यह भक्ति-भाव उन्हें कृष्ण के प्रति अर्जुन का-सा बापू के विराटत्व एवं बहुत्व का अनुभव कराता है । तदर्थ कवि उन्हें जन-साधारण के सामान्य धरातल से बहुत ऊपर उठे हुए असाधारण महामानव के रूप में देखते हैं । बापू की विराट एवं अपनी सीमित शक्ति की लघुता का अनुभव करते हुए कवि कहते हैं -

'लिखे तुम्हारी कथा कौन जो
तुम-सा महत् बड़ा हो,
जो तुम-सा ही ज्वालागिरि के
मुख पर हुआ खड़ा हो,
पल-पल महाकाल से आगे
बढ़-बढ़ सतत लड़ा हो
सागर की तो थाह नाप
सकती, सागर की धड़कन
किस भाषा में कहूँ आज मैं
देव तुम्हारा वंदन ?' ७०

और- 'शब्द नहीं कर पाते हैं,
समुचित सम्मान तुम्हारा,
भाव मूक हो जाते हैं
गाते गुणगान तुम्हारा,
छंद मंद पड़ जाते हैं
रुक जाती है स्वर धारा,
उठ उठकर झुक-झुक जाता
मेरी वीणा का कंपन।
किस भाषा में करूँ आज मैं
देव तुम्हारा वंदन।'[७१]

यह भावाधिक्यपूर्ण अनुभूति कवि को उन्हें राष्ट्र-देवता के रूप में स्थापित कर उनकी नीराजना करने के लिए विवश कर देती है। यथा-

'देवता नव राष्ट्र के नव राष्ट्र की नव अर्चना लो
विश्ववंद्य वरेण्य बापू। विश्व की नव वंदना लो
पा तुम्हारा स्नेह धागा,
यह अभागा देश जागा
जागरण के देवता! नवजागरण की गर्जना लो।
हे अहिंसा के पुजारी।
प्रणति हो कैसे तुम्हारी?
मौन प्राणों की निरन्तर स्नेहमय नीराजना लो।'[७२]

अहिंसा के इस पुजारी ने राष्ट्र की चेतना को जागृत करते हुए समस्त राष्ट्र के प्राणों में अहिंसात्मक चिन्तन भरने का सशक्त प्रयास किया। गांधी जी का दृढ़ विश्वास था कि अहिंसात्मक अमोघ शस्त्र के द्वारा दानवीय वृत्तियों से परिपूर्ण मानव को उस परिवृत्त में से बाहर निकाल कर पुन: मानवता संस्थापित करने का

यत्न किया जा सकता है । यह एक प्रणोधात्मक शस्त्र है जो मानव- प्रेम और क्षमा के उदात्त गुणों पर आधारित है । तभी तो इस मार्ग का अनुसरण करनेवाला व्यक्ति त्याग एवं बलिदान की भावना के साथ कार्य करता है । बापू की इस भावना का प्रदर्शन इस तरह किया गया है -

'आत्माहुति के मणिमाणिक से
मढ़ते जननी का स्वर्ण-ताज ।
मानव को दानव के मुंह से
ला रहे खींच बाहर बढ़-बढ़ ।'[७३]

और- 'आत्माहुति के अनुपम प्रयोग
नूतन दधीचि के नवल योग,
बलिदान गीत, बलिदान गान ।
तुम नव संस्कृति के नव विधान ।'[७४]

पूर्ववर्ती पृष्ठों में गांधी जी द्वारा संचालित राष्ट्रीय आंदोलन के साथ-साथ आतंकवादी आंदोलन पर भी विहंगम दृष्टिक्षेप करते हुए यह निर्दिष्ट किया जा चुका है कि प्राय: गांधी जी के सत्याग्रहों के स्थान स्थगन पर हिंसक क्रांति का भी दौर चलता रहा । यह भी लक्ष्य किया जा चुका है कि जब कभी राष्ट्र में हिंसात्मक आक्रमण होते रहे तब गांधी जी ने अहिंसक शस्त्र के प्रबलतम साधन के रूप में वे उपवास करते रहे । सामान्य स्थिति में वे निश्चित समय तक के उपवास करते थे किन्तु दलितों के पृथक निर्वाचन के साम्प्रदायिक निर्णय पर गांधी जी ने २० सितम्बर १९३२ के दिन आमरण अनशन की जो भिष्मप्रतिज्ञा घोषित की थी, कि जिसका उल्लेख पूर्ववर्ती पृष्ठों में किया जा चुका है, तब राष्ट्र भर में उसे व्रत एवं प्रार्थना के रूप में मनाया गया । कवि इस परिस्थिति का प्राणवान चित्र अंकित करते हुए कहते हैं -

'हे प्रबुद्ध ।
आज तुम करने चले पुन: युद्ध ।
अग्नि में प्रवेश कर बनने चले आत्म शुद्ध
मुक्त करने चले निज द्वार रुद्ध
हे अक्रुद्ध ।'[७५]

उपवास के भावनात्मक पक्ष पर विचार करते हुए उनका विश्वास है कि संसार को ताप-क्लेश से मुक्त करते हुए लोकमंगल करना ही उपवास का मूल आशय होता है । इस रहस्य की ओर संकेत करते हुए कवि कहते हैं -

'आत्म प्रज्ञ, तुम धन्य । धन्य तव
आत्माहुति अभ्यास ।
हरे जगती का संकट त्रास ।
तुम्हारा यह पावन उपवास ।'[७६]

राष्ट्र के वरेण्य बापू के उपवास पर जनता जितनी दुखी और खिन्न हुई, उसकी समाप्ति पर उतनी ही प्रसन्न भी । 'आज दिवस है व्रत समाप्ति का, महाशान्ति का पर्व'[७७] कविता में इसे भलीभांति लक्ष्य किया जा सकता है । इसी प्रकार सविनय कानून भंग वाले सत्याग्रह की अहिंसक भाव-चेतना को कवि की 'दाण्डी-यात्रा'[७८] नामक रचना में दृष्टिगत किया जा सकता है । राष्ट्रपिता बापू ने साबरमती आश्रम अखिल भारतीय हरिजन संघ को समर्पित कर वर्धा के निकट सेगांव (सेवाग्राम) को अपनी राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक गतिविधियों का केन्द्र बनाते हुए किस तरह शेष जीवन वहीं व्यतीत किया, उसका कवि ने 'सेगांव का सन्त'[७९], 'सेवाग्राम की आत्मकथा'[८०], 'सेवाग्राम'[८१] आदि अनेक कविताओं में सटीक चित्रण किया है । बापू के सत्याग्रहों में सम्मिलित होनेवाले सत्याग्रहियों के अहिंसक आचरणों पर प्रकाश डालते हुए कवि ने अनेक कविताएँ लिखीं जिनमें 'हमको ऐसे युवक चाहिए'[८२], 'सत्याग्रही'[८३] आदि प्रमुख हैं । इतना ही नहीं 'बेतवा का सत्याग्रह'

भी उनकी प्रसिद्ध रचना रही है जो स्थानीय होते हुए भी राष्ट्रीय जागरण काल में जनता की प्रबुद्ध चेतना ने किस तरह सविनय कानून भंग कर विजय पाई थी उसका भव्य चित्र प्रस्तुत रचना में दृष्टिगत किया जा सकता है । साथ ही `त्रिपुरी कांग्रेस` नामक काव्य में कवि ने तत्युगीन जनता के जागरणमूलक उत्साह व उमंग को प्रदर्शित कर यह भी विश्वास प्रकट किया है कि-

`टूटेंगी अपनी हथकड़ियाँ
ढह जायेगा यह राजतंत्र,
होगी भारत-जननी स्वतंत्र
होंगे भारत-वासी स्वतंत्र ।`[८५]

इसके अतिरिक्त यतीन्द्रनाथ दास के शहीद हो जाने पर लिखित श्रद्धांजलि के रूप में उनकी प्रसिद्ध कविता `अपना फूलों भरा जनाजा`[८६] भी राष्ट्रीय संदर्भ को प्रस्तुत करती है ।

इस तरह राष्ट्रीय आंदोलन के इस कालखण्ड में (सन् १९२०-२१ से लेकर सन् १९४७ ई० तक) द्विवेदी जी लिखित समग्र कविताओं के अनुशीलन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि द्विवेदी जी ने युगीन आवश्यकताओं एवं विभिन्न परिस्थितियों गत संदर्भों से पूर्णतया सम्पृक्त रहकर काव्य-साधना की है । स्वाधीनता-प्राप्ति के लक्ष्य की पूर्ति के लिए राष्ट्र कवि सदैव चिंतित एवं सजग रहा है । युग चेता एवं युग प्रवर्तक महात्मा गांधी की चेतना से सम्बद्ध रहते हुए द्विवेदी जी एक ओर राष्ट्र को लक्ष्य प्राप्ति के लिए निरंतर जागृत करने का शंखनाद करते रहते हैं और जब तक लक्ष्य-प्राप्ति न हो जाय तब तक राष्ट्र के उस पुनीत यज्ञ में जन-समाज को निरन्तर प्रयत्नशील रहने को उत्प्रेरित करते हैं तो दूसरी ओर युग प्रभावक बापू के विराट महामानव व्यक्तित्व से अभिभूत होकर उनके द्वारा निर्दिष्ट सत्य एवं अहिंसात्मक नीतियों का स्वयं परिपालन करते हुए राष्ट्र को उसी मार्ग का अनुसरण करने का संदेश देते हैं । राष्ट्रीय आंदोलनों में गांधी द्वारा संचालित विविध

सत्याग्रहों की चेतना को भी उन्होंने उपर्युक्त विभिन्न कविताओं में उजागर किया है।

कवि की चेतना आतंकवादी नेताओं की शहादत पर श्रद्धांजलि प्रदान करने के लिए भी तत्पर रहती है । तात्पर्य यह कि राष्ट्र की मुक्ति के यज्ञ में समिधा के रूप में बलिदान देनेवाला राष्ट्र-भक्त उन्हें अत्यधिक प्यारा है । अतः उसे राष्ट्रोचित सम्मान (श्रद्धांजलि द्वारा) देना भी अपना कर्तव्य समझते हैं ।

(घ) स्वातंत्र्योत्तरकालीन युग-सन्दर्भ

आधुनिक हिंदी की राष्ट्रीय काव्यधारा की विकासात्मक पृष्ठभूमियों के संदर्भ में विचार करते समय यह लक्ष्य किया गया है कि स्वाधीनता प्राप्ति के साथ ही राष्ट्र में कतिपय सम-विषम परिस्थितियों का निर्माण हो गया था । राष्ट्र के विभाजन के परिणाम स्वरूप एक ओर हिन्दू-मुस्लिम सांप्रदायिक विद्वेष के आधार पर देश में निवसित हिन्दू-मुस्लिमों के बीच पारस्परिक तनाव की स्थिति थी तो दूसरी ओर पाकिस्तान से निर्वासित भारतीयों को स्थायी प्रकाश देने का भगीरथ कार्य देश के समक्ष आ पड़ा था । इधर गणतंत्र राष्ट्र का लोकतांत्रिक धरातल पर नव-निर्माण का कार्य था, तो राष्ट्र के दलित, एवं शोषित जन-समाज का उत्कर्ष भी करना था । इतना ही नहीं राष्ट्र की स्वाधीनता एवं अखंडतता की सुरक्षा का दायित्व भी नूतन राष्ट्र को निभाना था । इस प्रकार के अनेकविध दायित्वों का निर्वाह करते हुए राष्ट्र को अग्रसर होना था । स्वाधीन राष्ट्र के शासकों को इस दृष्टि से अत्यन्त सावधानी और जागरूकता के गांधी निर्दिष्ट कतिपय नीति-नियमों के आधार पर राष्ट्र की धुरा का निर्वहण करना था । स्वातंत्र्योत्तर भारत की उक्त विविध आशा-आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए राष्ट्रीय जागरण के वैतालिक पं० सोहनलाल द्विवेदी कितने जागरूक हैं और राष्ट्र-निर्माण के पुनीत यज्ञ को भलीभांति पूरा करने के लिए वे अपने उत्तरदायित्व का किस तरह निर्वाह करते हैं यह देखने का प्रयास किया जाएगा ।

चतुर्थ अध्याय में कवि की कृतियों का परिचय प्राप्त करते हुए हम यह देख आये हैं कि उनकी इस काल खण्ड की मौलिक राष्ट्रीय कृतियाँ `चेतना`, `जयगांधी` तथा `मुक्तिगंधा` हैं। `चेतना` की प्रथम रचना `तिरंग ध्वज` में ही कवि स्वातंत्र्य-प्राप्ति के उल्लेख के साथ नूतन राष्ट्र-निर्माण की ओर संकेत कर देते हैं। स्वतंत्रता-प्राप्ति के आनंद व उल्लास को सर्वप्रथम व्यक्त करते हुए कवि कतिपय गीतों की रचना करते हैं। `मंगल गीत`, `स्वतंत्रता के पुण्य पर्व पर`, `यह स्वतंत्रता की अरुण उषा`, `गीत`, `मुक्तिपर्व`, `जयकेतन` आदि गीतों में उक्त भाव-चेतना को दृष्टिगत किया जा सकता है। स्वतंत्रता रूपी नव शिशु के जन्म की कल्पना कितनी मनोरम है।

यथा- `मेरी स्वतंत्रता का नव शिशु
जन्म ले रहा बनकर नव विधु,
जनता जलधि हिलोर ले रहा
ले सुख की लहरें सुहासिनी।
गाओ मंगल गीत रागिनी।`[८७]

हृदतंत्री के तारों को आनंदानुभूति से झंकृत कर देनेवाली स्वतंत्रता के आगमन का स्वागत किस तरह किया जा रहा है यह दृष्टव्य है -

`साज लो सितार तार, आ रही स्वतंत्रता,
बाजे सरगम बहार, आ रही स्वतंत्रता।
आज की उषा नवीन, आज की दिशा नवीन,
आज किरण किरण थिरक रही ले प्रभा नवीन,
आज श्वास है नवीन, आज की पवन नवीन,
प्राण-प्राण में पराग, सौरभ स्पंदन नवीन।`[८८]

साथ ही राष्ट्र के वर्गहीन समाज-नव-रचना की आकांक्षा भी की गई है।यथा-

वह वर्गहीन नव स्वर्ग आज
इस-भूतल में ले रहा जन्म
जिसमें बसने के लिए देवता
लगे आज फिर ललचाने ।`[८९]

और- `अब सृजन करो अपने मन का भय
ले वैभव के सुख-साधन,
ललकार रहा है वर्तमान
हैं कहाँ देश के दीवाने ?`[९०]

इन पंक्तियों में राष्ट्र के नव-निर्माण के लिए उन दीवानों को ललकारा गया है जिन्होंने स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए पूर्ण लगन के साथ कार्य किया था । स्वाधीनता प्राप्ति तो एक राजनीतिक सिद्धि थी । वास्तव में राष्ट्र-निर्माण ही हमारा लक्ष्य है जिसके लिए निर्विलंब कार्यरत हो जाने को कवि उन दीवानों को उपदिष्ट करते हैं ।

स्वातंत्र्योत्तर कालीन युग-सन्दर्भ का दूसरा पक्ष जो इस कालखण्ड की कविताओं में प्रकाश में आता है वह महात्मा गांधी की हत्या का है । पूर्ववर्ती विवेचन में निर्दिष्ट कवि की गांधी विषयक भावभूमि के सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि सम्भवत: कवि की अनुभूति को मिलनेवाला यह सबसे बड़ा आघात था । कवि का करुणार्द्र हृदय अकथ्य वेदना का अनुभव करता हुआ कतिपय रचनाओं का सर्जन करता है । `वज्रपात`, `महानिर्वाण`, `आज राष्ट्र के कण-कण को गांधी की मूर्ति करेंगे हम`, `उद्बोधन`, `वह बापू की आत्मा बोली`, `कैसा वसन्त कैसी होली ?`, `श्रद्धांजलि`, `पंद्रह अगस्त` आदि कविताओं में कवि की व्यथा के चित्र दृष्टिगत किये जा सकते हैं । यथा-

`आज देश पर अनभ्र वज्रपात है हुआ,
आज देश का अमूल्य प्राण मृत्यु ने छुआ,

बन अमृत जिला रही कि जिस फकीर की दुआ,
आज वही महाप्राण देश में रहा नहीं ।[६१]

कवि को ग्लानि एवं विषाद की अनुभूति इसलिए अधिक होती है कि बापू ही तो राष्ट्रीय आंदोलन के सूत्रधार थे। उन्हीं के बलबूते पर समस्त राष्ट्र की चेतना उद्‌बुद्ध हो सकी थी और स्वाधीनता प्राप्ति के लक्ष्य की पूर्ति में भी उनका ही अनुपम योगदान था। वे राष्ट्र की आशा-आकांक्षा के साकार स्वरूप थे तो अहिंसा के उज्ज्वल अवतार थे। यथा-

'जिसके बल पर उठे, बढ़े हम,
हमने रण हुंकार किया।
जिसके बल पर जिये-मरे हम
सौ-सौ संकट पार किया।
जिसके बल पर विजय मुकुट से
जननी का श्रृंगार किया।
जिसके बल पर हो स्वतंत्र,
भारत का जयजयकार किया ।
वही शांति की मूर्ति प्राण की
स्फूर्ति, राष्ट्र पतवार गया।
गया सत्य का तेज, अहिंसा का
उज्ज्वल अवतार गया।'[६२]

बापू के आकस्मिक निधन पर इस तरह दु:खी होनेवाला कवि तुरंत संभल जाता है और जनसमाज को धैर्य दिलाते हुए बापू के मार्ग पर चलने के लिए उपदिष्ट करता है -

'हम सब ऐसी करें साधना
जन-जन में हो प्रेम भावना
जननी जन्मभूमि की जय हो, जीवन का उद्देश।
हिम्मत हार न मेरे देश।'[६३]

यही भाव इस संग्रह की 'श्रद्धांजलि' शीर्षक कविता में अभिव्यक्त हुआ है।

स्वातंत्र्योत्तरकालीन युग सन्दर्भ का तीसरा पक्ष राष्ट्र-निर्माण का है। राष्ट्रीय जागरण का कवि, जो राष्ट्रीय आन्दोलनों के समय निरन्तर जन-समाज को जागृत कर रहा था, स्वातंत्र्य प्राप्ति के पश्चात भी राष्ट्र-निर्माण के पुनीत कर्तव्य के लिए राष्ट्र को जगाता रहा है। सामान्यत: मानव सुलभ स्वभाव के अनुसार स्वाधीनता प्राप्ति के लक्ष्य को प्राप्त कर लेने पर राष्ट्र शांति की नींद ले रहा था। किन्तु कवि तो जनता का प्रतिनिधि है और राष्ट्र का शुभचिंतक। तदर्थ स्वयंचेता कवि राष्ट्र को नींद से जगाने का यत्न करता हुआ कहता है -

'अब न गहरी नींद में तुम सो सकोगे,
गीत गाकर मैं जगाने आ रहा हूँ।
अतल अस्ताचल तुम्हें जाने न दूँगा,
अरुण उदयाचल सजाने आ रहा हूँ।'[६४]

और- 'खामोश न बैठो बन मुरदे,
आँधियाँ बनो, तूफान बनो।
दुनिया है बदल गई सारी,
तुम आज नये इन्सान बनो।'[६५]

स्वाधीनता-प्राप्ति के लक्ष्य की पूर्ति के लिए जिस तरह राष्ट्र ने बलिदानी भावना को संजोकर आत्मसमर्पण का प्रवाह बहाया था, राष्ट्र निर्माण के कार्य में भी उसी भक्ति-भाव से संलग्न होते हुए उत्साह व उमंग के साथ आवश्यकता पड़ने पर उसी प्रवाह को निरन्तर बहाने का संदेश देते हुए कवि कहते हैं -

'इस स्वतंत्रता की अमर ज्योति
की ज्वाला मंद न हो।
प्राणों का स्नेह चढ़ाने की
यह धारा बन्द न हो।'[६६]

सबल राष्ट्र के निर्माणकारी यज्ञ में युगचेता एवं सुबुद्ध युगद्रष्टा कवि अपने युगीन दायित्व को भलीभांति समझते हुए राष्ट्र की मंगल कामना करते हैं। नवयुग के आगमन का स्वागत करते हुए वे कहते हैं। 'युगभारती' तथा प्रयाण गीत आदि अनेक कविताएं इस तथ्य का द्योतन करती हैं।[६७] नव-निर्माण में भी कवि वीरोचित उत्साह का संचार करते हुए कहता है -

> 'आज तुम्हारी भी स्वर लहरी,
> गूंजे, ऐसी गमक उठे,
> सबल राष्ट्र की रचना में
> प्राणों का पौरुष तमक उठे।'[६८]

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है स्वातंत्र्योत्तर युग में राष्ट्र के नव-निर्माण की बलवती इच्छा, आशा-आकांक्षा को लेकर जनसमाज रंगीन स्वप्न देख रहा था। इधर गणतंत्र राज्य के शासक भी नवीन उत्साह व उमंग को लिए रावी के तट पर ली हुई शपथों का स्मरण करते हुए राष्ट्र-निर्माण के कार्य में संलग्न हो रहे थे। तदर्थ राष्ट्र मंगलकारी पंचवर्षीय योजनाएं भी निर्मित की गईं। किन्तु शासन-सत्ता हस्तगत हो जाने पर बहुधा शासक उन प्रतिज्ञाओं का पूर्णतया पालन करने में जाने-अनजाने असफल रहता है। जनता की आशा-आकांक्षाओं के प्रतिनिधि शासक कतिपय मानव सुलभ दुर्बलताओं का शिकार हो जाता है। संभवत: वह सिंहासन के मोह में ग्रस्त होकर अपनी स्वार्थमय नीतियों का पालन करने का आडंबरपूर्ण प्रयास करता है। जनता की आशा-आकांक्षाएं एक ओर रह जाती हैं और शासक सत्तालोभ, धन लोभ आदि की कुंठाओं का शिकार होकर अपने दायित्वों का विस्मरण कर देता है। जनता की पीडाएं, आहें दूर करने का पाखंडपूर्ण व्यवहार करते हुए वह निजी सुख-सुविधा एवं आनंद-प्रमोद का प्रयत्न करता रहता है। राष्ट्र-निर्माण कालीन इस युग में भारत की भी प्राय: यही स्थिति हुई। पीड़ित जनता की आर्थिक व सामाजिक स्थितियों में आवश्यक तथा अपेक्षित सुधार न देखा गया।

तदर्थ उसके मानस में प्रतिक्रियाएं होने लगीं। द्विवेदी जी ने युगीन संदर्भों में जन-मानस की इन प्रतिक्रियाओं को वाणी प्रदान करते हुए अनेक रचनाएं लिखीं हैं जो 'मुक्तिगंधा' में संगृहीत हैं। 'मुक्तिगंधा' के विषय वस्तु के सन्दर्भ में कवि स्वयं लिखते हैं, 'स्वातंत्र्योत्तर काल में, देश जिन आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक गतिविधियों के मोड़ से गुजरा है, जनता पर जो उसकी प्रतिक्रिया हुई है उसकी मानसिक आशा, निराशा, आकांक्षा, आक्रोश के भाव साकार होकर आपसे साक्षात्कार करना चाहते हैं। इन रचनाओं में कवि के व्यक्तिगत नहीं, जनता की भावनाओं की अभिव्यक्ति है, जिनका वह प्रतिनिधि है, जिनका वह प्रवक्ता है, जिनका वह प्रहरी है।[९९] इससे यह स्पष्ट है कि कवि ने प्रस्तुत कृति में युगीन संदर्भों का यथार्थ चित्रण करने का यत्न किया है। कवि का चतुर्थ पक्ष शासनगत विकृतियों को सुधारने का रहा है, जो राष्ट्र के कल्याण में अवरोध उपस्थित करती थीं। ऐसा करते हुए कवि ने कभी अपनी संयत वाणी में शासन को सावधान करने का यत्न किया है तो अपेक्षित परिवर्तन न देखने पर उसे चुनौती भी दी है और घोषित किया है कि जनता की पीड़ाएं, असन्तोष, निराशाएं आदि एक दिन क्रांति का स्वरूप धारण कर लेंगी और उसे पदभ्रष्ट भी कर देंगी। 'मुक्तिगंधा' के आत्म चिन्तन खण्ड में संकलित कवि की बहुचर्चित 'भण्डे फहराने वालों' और 'दिल्ली दरबार' जैसी बड़ी रचनाएँ इसका प्रमाण हैं। शासन में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा जन-जीवन की वेदना के प्रति कवि अत्यंत संवेदनशील है -

'हटी काली रात, फिर भी
घिरी काली रात।
कल अभी था एक क्रन्दन,
किन्तु आज अनेक क्रन्दन।'[१००]

और- 'ओ गणतन्त्र मनानेवालों,
ओ जनतंत्र गीत के गायक,

पीछे हटो, बढ़ो मत आगे
बन जनता के उन्नायक,
स्वयं सुधारो तुम अपने को
ओ सुधारवादी नेता,
कथनी और, और करनी है
आज रहे तुम किस लायक ?'[१०१]

इस तरह शासन को आत्मचिन्तन करने का सुअवसर देते हुए सावधान करने का कवि यत्न करता है। किन्तु इसमें अपेक्षित सुधार न देखने पर कवि शासन की आडम्बरपूर्ण नीतियों के प्रति प्रहार करते हुए कहते हैं -

'कब तक ऐसे झूठे त्योहार मनाओगे ?
कब तक ऐसे झूठे श्रृंगार सजाओगे ?
ये झूठी खुशियाँ और मनाओ आज नहीं
दिन आज खुशी का नहीं, दुखी दिलवालों का।'[१०२]

'खादीगीत' लिखनेवाला कवि जिसने बड़ी भावनाओं के साथ खादी को अपने जीवन में अपनाया और उसके सम्यक प्रचार-प्रसार का काम उनके उक्त गीत ने कहां तक किया उसका उल्लेख पूर्ववर्ती पृष्ठों में किया जा चुका है। वह कवि शासन के द्वारा आज खादी के आडंबरपूर्ण तथा भावनाशून्य उपयोग को देखकर कितना खिन्न होता है यह द्रष्टव्य है -

'यह खादी का वेश सत्य का
वेश शहीदों का बाना,
जिसे किया धारण बापू ने
आत्माहुति देना जाना,

इसे कलंकित करो आज मत,
जो गौरव अंकित इस पर,
इसकी धवल कीर्ति को
धूमिल करने का छोड़ो गाना ।`[१०३]

दूसरे देशों से कर्ज के रूप में रूपये लाकर देश की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन करने की अंधाधुंध योजना और राष्ट्र के करोड़ों निवासियों की देश में ही उपलब्ध साधनों के विकास के द्वारा वास्तविक आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं के सुधार के दायित्व का निर्वहण न करने पर देश की आर्थिक विपन्नता देखकर शासन के प्रति कवि की वेदनापूर्ण अनुभूति इस तरह अभिव्यक्त हुई है -

`आजादी तो आयी, बरबादी गयी नहीं,
पूरी न हुई वह आशा जो मन में पूजी ।
रूपये दिखलाते बहुत, मगर वे दिवालिया,
यह देश तुम्हारा आज बना कंगालोंगा ।`[१०३(अ)]

और- `बेड़ियाँ कर्ज की और बाँधों पाँवों में,
क्या इससे हमको नींद चैन की आयेगी ?
है एक गुलामी हटी, दूसरी फिर आयी,
यह मर्ज हमारा और बढ़ गया सालों का ।`[१०४]

वस्तुत: इस देश में प्राकृतिक निधि के रूप में प्रत्येक आवश्यक चीज मिल जाती है किन्तु रिश्वत और चोरबाजारी बढाने के उद्देश्य से वे सारी चीजें गरीब लोगों तक पहुंचती नहीं हैं । देश में यह खतरनाक रोग बुरी तरह बढ़ाया जा रहा है जो राष्ट्र के विकास में व्याघात पहुंचानेवाला होगा -

`हर कदम कदम पर मिलती है हर चीज यहाँ,
जब दाम सवाया या ड्योढ़ा दे आते हैं ,

जब कभी खरे पैसे हम उनको दिखलाते,
तब खाली हाथों, मुँह लटकाये आते हैं ।
तुम चोर-बजारी बढ़ा रहे या घटा रहे,
बेहाल करो मत हाल और बेहालों का ।'[१०५]

स्थानीय स्वराज्य अर्थात् पंचायत राज की विकृति भी उनकी कटु आलोचना का लक्ष्य ~~करती~~ बनी है -

'पटवारी तो पटवारी थे, पर यह प्रधान
जो बना गाँव का खाऊ बड़ा लुटेरा है
अपनी जमीन औ' जोत बनाये रखने को
बिक चुका बहुत-कुछ अपना लुटिया-डेरा है ।
क्या न्याय मिलेगा यों ही रिश्वत देने से,
यह राज्य चलेगा कब तक रिश्वतवालों का ।'[१०६]

तथा- 'असन्तोष की आग सुलगती
जाती ही है अनजानी,
मंहगाई, भुखमरी, गरीबी
बढ़ती जाती मनमानी ।'[१०७]

सामाजिक स्थिति भी कुछ अच्छी नहीं थी । जनता को अपने देश के अपने शासक के अपनत्व का कभी अनुभव नहीं हुआ था । जनता के हमदर्द बनकर ~~'मुंचि तांथा' 'कपड़े फहरानेवालों' (शीर्षक), पृ०~~ कभी शासक ने उसकी वास्तविक स्थिति को जानने का यत्न नहीं किया था । शासक तो जनता का दुख विनाशक व हितचिन्तक होता है । कुछ ऐसी ही जनता के भाव कवि ने इस तरह व्यक्त किये हैं -

'बनकर सचमुच हमदर्द कभी आये होते
छुपके चुपके क्या हम पर आज गुजरती है,

तुम खुद ही अपनी आँख देख लेते सब कुछ
जिन्दगी बिगड़ती जाती या कि सँवरती है ।
होता न भले कुछ, पर, आँसू तो पुँछ जाते,
हम तुम्हें समझते तुम हितचिन्तक शासक हो,
हम लेते तुमको मान, तुम्हें हमदर्दी है,
तुम सचमुच ही जनता के दु:ख विनाशक हो ।
पर कब तुम पुरसां हाल बने दुख दर्दों के,
तुमको तो आता रहा ख्याल खुशहालों का ।' १०८

इस तरह की अनेक संवेदनापूर्ण जनता की प्रतिक्रियात्मक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति कवि ने की है । कवि राष्ट्र की सच्ची वस्तुस्थिति का यथार्थ चित्रण किये बिना रह नहीं सकता क्योंकि राष्ट्र का सशक्त विकास ही उसका लक्ष्य है । वह सत्य से कभी न मुकरनेवाली निर्भीक मन:स्थिति के साथ जनता के कवि, प्रवक्ता एवं प्रहरी के रूप में काव्य-साधना करनेवाला कवि है । वह उन शासकों की स्वार्थपूर्ण नीतियों में नहीं मानता । निस्वार्थभावेन राष्ट्र की सेवा और निरन्तर राष्ट्र के यथोचित विकास का हितचिंतन करनेवाला राष्ट्र कवि है । तदर्थ सत्य पर आधारित उनकी कतिपय उक्तियां भी उनकी रचनाओं में सर्वत्र मिलती हैं । यह उनकी स्वभाव-गत विशेषता है जिसके संदर्भ में पूर्ववर्ती पृष्ठों में सविस्तर कहा जा चुका है । आज शासन सत्ता से भयभीत होकर बड़े-बड़े चिंतक भी सत्य से मुकरजाने की चेष्टा करते हैं या उसकी खुशामद करना प्रारंभ कर देते हैं । द्विवेदी जी एक ऐसे कवि हैं जो न कभी शासन की खुशामद करते हैं और न कभी सत्य से मुकरते हैं । यद्यपि उन्होंने अपने सत्यवादी स्वभाव के कारण बहुत कुछ सहन भी किया है, तथापि उन्होंने आजीवन सत्य का ही पक्ष लेकर राष्ट्र की सच्चे अर्थों में सेवा की है । वे सच्चे अर्थों में सत्याग्रही सेनानी हैं । उन्होंने साहित्यकार की ईमानदारी को खूब निभाया है । तभी तो वे शासन-सत्ता से यहाँ तक कह देते हैं -

'सच सच कहना, ये खरी खरी कड़वी बातें,
तेजाब सरीखी तेज बहुत लगती होंगी ?
हम सावधान कर रहे तुम्हें जो घेरे हैं,
उनमें बहुतेरे हैं अवसरवादी ढोंगी ।

गर सच कहना है जुर्म, तुम्हारा मुजरिम हूँ
दो सजा मौत की जन्नत देश निकालों का ।[१०६]

उपर्युक्त प्रकार से कटु प्रहारों के साथ-साथ वे पैने व्यंग्य का भी सहारा लेते हैं -

'मुसकान बिखेरो तुम अपनी इस जलसे में,
मैं खारे आंसू इसमें आज मिलाऊँगा,
तुम विजय गीत गाओ अपने नक्कारों पर,
मैं आज हृदय का हाहाकार सुनाऊँगा ।[११०]

इसका मुख्य कारण है कि कवि में एक नैतिक बल है, अतः वह अपने दायित्व के प्रति पूर्णतया सजग भी है, अपना संकल्प प्रस्तुत करते हुए वह कहता है -

'पर हाँ हुजूर, मैं नहीं करो जो हाँ में हाँ,
जो ऐब करोगे खुलकर उसे बताऊँगा,
मदहोश हुए गर सिंहासन में बैठ-बैठ,
नीचे उतारकर तुम्हें होश में लाऊँगा ।[१११]
मुझे नहीं है लोभ, राज के
वरदानी वरदान का
मुझे नहीं है लोभ राज्य के
सम्मानी सम्मान का,
मैं जनता का साथी हूँ
मैं कवि हूँ हिन्दुस्तान का ;
खोज रहा हूँ माँझी माँ की इस डगमग पतवार का ।[११२]
मुझे भरोसा रहा नहीं अब दिल्ली के दरबार का ।[११२]

अंतिम चेतावनी के रूप में कवि शासक से यह भी कहता है कि जनता का असन्तोष, निराशा एवं दर्द जब कभी असह्य हो जाता है तब वही क्रान्ति का

रूप ले लेता है और कहीं ऐसा न हो कि जनता तुम्हारे हाथों में से शासन-सूत्र छीन ले । यथा-

जिनमें बेकाबू दर्द आग बन जाता है
वे आंधी बन, दुनिया समेटकर चलते हैं ।
लेते फण्डा वे छीन निकम्मे हाथों से,
इतिहास नाम लिखता ऐसे मतवालों का ।'[११३]

और- 'यह विद्रोह न भस्म करे घर
बनकर ज्वाला तूफानी ;
कलम छोड़कर ले न सहारा क्रोध कहीं तलवार का ।
मुझे भरोसा रहा नहीं अब दिल्ली के दरबार का ।'[११४]

इस प्रकार विद्रोहात्मक चुनौतियाँ देने के उपरान्त भी हम यह नहीं कह सकते कि कवि द्विवेदी जी 'नवीन जी' की तरह विपलववादी हैं क्योंकि राष्ट्र के सम्यक् विकास में बाधक सिद्ध होनेवाली शासन-सत्ता की जो विरोधी नीतियाँ थीं उनके प्रति सदाशयपूर्ण दिशादर्शन करना ही कवि का उद्देश्य है । तभी तो वे यह भी कहते हैं कि -

'व्यथा दूर हो सभी देश की, इतना आज अगर कर पाओ,
सिंहासन का मोह छोड़कर जनता के साथी बन जाओ ।
जनता की आकांक्षा तड़पन
जनता की चाहें औ' आहें,
जनता के बनकर के ही तुम
समझ सकोगे कसक कराहें,
हे मेरे युग निर्माता । नवयुग का निर्माण सजाओ
व्यथा दूर हो सभी देश की, इतना आज अगर कर पाओ ।'[११५]

इन पंक्तियों में कवि के सन सदाशय के दर्शन भलीभांति हो सकते हैं। उन्हें वास्तव में शासकों के प्रति कोई दुर्भाव नहीं है, केवल उनकी विरोधपूर्ण नीतियों, जो राष्ट्र के विकास में अवरोध उपस्थित कर रही हैं, के प्रति दुख है, अफसोस है और उन्हें दूर करने के लिए सात्विक आक्रोश भी है। उनका विश्वास है कि राष्ट्र के नवयुग का निर्माण राग नहीं त्याग पर निर्भर है ✗ क्योंकि वे आस्था के कवि हैं। कवि के शब्दों में `अर्जन नहीं विसर्जन निधि है`। अत: शासकों को कथनी नहीं, करनी की भाषा अपनानी चाहिए।

यथा- `कुछ धरा न केवल कहने में,
केवल भावों में बहने में,
करनी की भाषा में बोलो,
सौ प्रांतों का एक प्रात वह
सौ बातों की एक बात यह।`
\+ \+ \+
त्याग वहीं, अनुराग जहां है
त्याग जहां, सौभाग्य वहां है,
अर्जन नहीं, विसर्जन निधि है।`[११६]

स्वातंत्र्योत्तर कालीन युग सन्दर्भ का पंचम पक्ष आपत्काल में देश की अखंडता एवं स्वतंत्रता की सुरक्षा करना। इस काल खण्ड में देश पर चीन(सन् १९६२ ई०) एवं पाकिस्तान (सन् १९६५ ई०) जैसे दो पड़ोसी राष्ट्रों ने अकारण आक्रमण कर हमारी स्वतंत्रता को छीन लेने का दुष्कृत्य किया। कोई भी राष्ट्र-प्रेमी व्यक्ति इसे सहन नहीं कर सकता है। फिर कवि तो समाज व राष्ट्र का प्रतिनिधि होता है। तदर्थ इन आपत्कालीन स्थितियों में अपनी संवेदनापूर्ण अनुभूतियों को व्यक्त किये बिना वह कैसे रह सकता है ? द्वितीय अध्याय में राष्ट्रीय काव्यधारा के अनेक कवियों की इस संदर्भ में संवेदनाओं को लक्ष्य किया जा चुका है। द्विवेदी जी भी

राष्ट्र कवि होने के नाते आपत्कालीन परिस्थितियों में युगीन परिवेश को `मुक्तिगंधा` के अंतर्गत `जागते रहो` सोपान में इस तरह प्रस्तुत करते हैं -

`हिमगिरी की चोटी से पुकार
कहता हूं तुमसे बार- बार
मेरे भारत के कर्णधार ।
जागते रहो, हो खबरदार ।
+ + +
हो कहीं देश पर यदि प्रहार,
लो आक्रान्ता का शिर उतार,
हिमगिरि की चोटी से पुकार,
कहता हूं तुमसे बार-बार ।`[११७]

और- `घबड़ा कहीं न जाना, मत पीठ तुम दिखाना,
हो काल सामने भी तो शीष काट लाना,
ओ देश के सिपाही ।
मां का मुकुट हिमालय झुकने कभी न देना,
यह देश का शिवालय झुकने कभी न देना,
ओ देश के सिपाही ।`[११८]

इसके अतिरिक्त `अभियान गीत`, `वीर सैनिकों`, `सावधान ओ देशवासियों` आदि कविताओं में यही भाव-चेतना प्रवाहित हुई है । साथ ही राष्ट्र की रजत-जयंती पर लिखित रचना `रजत पर्व`[११९] बांगलादेश की स्वाधीनता के विजयपर्व पर लिखित `अक्षत चन्दन`[१२०] जैसी रचनाओं में भी युगीन संदर्भों के दर्शन हो सकते हैं । इतना ही नहीं `अभिवादन` नामक पुस्तक के सोपान में अनेक ऐसी राष्ट्रीय अस्मिताओं के विविध राष्ट्रीय संदर्भों में गौरव गीत गाये गये हैं जिनमें नोआखली में गांधी[१२१], विनोबा[१२२], सीमान्तगांधी,[१२३] राजेन्द्रबाबू[१२४] प्रमुख हैं ।

इस तरह समग्रतया स्वातंत्र्योत्तर कालीन कवि की विभिन्न रचनाओं का अनुशीलन करने पर यह कहा जा सकता है कि कवि ने स्वाधीनता-प्राप्ति के पश्चात निष्पन्न राष्ट्रीय परिवेश का पूर्ण आत्मीयता एवं लगन के साथ सम्यक् चित्र उपस्थित किया है । उनकी कविताएं राष्ट्र की विविध भूमियों का संस्पर्श करती हुई उनका सुखद समाधान ढूंढ़ती हैं । राष्ट्र-निर्माण के भगीरथ कार्य में कवि मनसावाचाकर्मणा अपनी नि:शेष चित्तवृत्तियों के साथ निरन्तर संलग्न रहे हैं और जहां कहीं राष्ट्र की कल्याणकारी समृद्धि में व्यवधान उपस्थित हुआ उसका डटकर प्रतिकार भी करते रहे हैं । एक ओर चीन और पाकिस्तान के हमले होने पर राष्ट्र की स्वतंत्रता की सुरक्षा के हेतु उन्होंने देश के वीर सैनिकों को दुश्मन को परास्त करने के उद्देश्य से शस्त्र हाथ में लेने को उत्प्रेरित किया है, तो दूसरी ओर गणतंत्र राष्ट्र के निजी शासकों की विरोधपूर्ण पाखंडी नीतियों के परित्याग के लिए सात्विक क्रोध भी प्रकट किया है । उनका चरम लक्ष्य गांधी निर्दिष्ट रीति-नीति के द्वारा राष्ट्र के नवयुग का नवनिर्माण ही करना है । उन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा इस दायित्व का भलीभांति ईमानदारी के साथ कवि के शब्दों में 'जनता के प्रतिनिधि, प्रवक्ता एवं प्रहरी'[१२५] के रूप में निर्वाह किया है ।

द्विवेदी जी की स्वातंत्र्य पूर्व एवं स्वातंत्र्योत्तरकालीन समस्त राष्ट्रीय रचनाओं के अनुशीलन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्वातंत्र्य पूर्व की रचनाओं में कवि जागरण के साथ-साथ स्वाधीनता की लक्ष्य पूर्ति में संलग्न देश नेताओं के प्रति अधिक आस्थावान रहा है । बापू की अहिंसात्मक रीति-नीतियों के प्रति उनमें अन्यतम विश्वास है और उनके सम्यक् परिपालन से ही कवि उत्तरकालीन राष्ट्र-निर्माण का भगीरथ कार्य संपन्न करने के प्रति सजग एवं आस्थावान दृष्टिगत होता है । इसीलिए इस कार्य में व्यवधान उपस्थित करनेवाले शासनगत भ्रष्टाचार एवं गांधी निर्दिष्ट सिद्धान्तों की घोर उपेक्षा को कवि सहन नहीं कर लेता और शासन की विकृतियों के प्रति विद्रोह करता है । जो

आस्था कवि को पूर्व के नेताओं के प्रति थी वह उत्तरकालीन नेताओं या राष्ट्र के सूत्रधारों के प्रति दृष्टिगत नहीं होती । कवि अपने व्यक्तिगत संस्कारों के कारण इतना निरीह और निर्भीक बनकर अपने युगीन दायित्व का ईमानदारी के साथ निर्वाह कर सका है ।

सन्दर्भ-सूची :

१- 'लार्ड रीडिंग को यह बात समझ लेनी चाहिए कि असहयोग करनेवाले सरकार से जंगी लड़ाई लड़ रहे हैं और उन्होंने सरकार के खिलाफ बगावत कर दी है।'

('यंग इंडिया' १५ दिसम्बर १६२१ के अंक से)

२- उन्होंने मंत्रिमंडल को लिखा था : 'मुहम्मदली हिंदू और मुसलमान को जोड़नेवाली कड़ी है, अगर उनमें और गांधी में झगड़ा हो गया तो वह कड़ी टूट जाएगी। अगर मुहम्मद अली ने गांधी का कहना मान लिया और वह कहना मानकर अवश्य ही प्रांतवाद कर देंगे, तो उनकी सार्वजनिक प्रतिष्ठा खत्म हो जायेगी'।

(रीडिंग मार्क्वेस आफ रुफस इजाक्स, फर्स्ट मार्क्वेस आफ रीडिंग, खण्ड२, पृ० ११६

३- तेंदुलकर 'महात्मा' की जिल्द-२ पृ०११८

४- जवाहरलाल नेहरू, 'मेरी कहानी' सस्ता साहित्य मण्डल, १६६१

५- 'राजनैतिक आजादी का मतलब ही है जन चेतना में वृद्धि और जन चेतना में वृद्धि तभी संभव है जब राष्ट्रीय जीवन के सभी क्षेत्रों में काम हो।'

६- '१८३६ ई० में भारत सरकार ने एक नमक कमीशन बैठाकर भारत में अंग्रेजी नमक की बिक्री के खातिर भारतीय नमक कर लगाने का सुझाव दिया था। तभी से भारत में नमक कर लगा और वसूल किया जाता रहा। अंग्रेजी नमक इंग्लैंड के चेशायर नामक स्थान से आता था।'

७- अमरीकी संवाददाता वेब मिलर ने 'न्यूफ्रीमैन' पत्र में लाठीचार्ज का आंखों देखा वर्णन इस प्रकार किया, 'अठारह वर्षों से मैं दुनिया के बाइस देशों में संवाददाता का काम कर रहा हूं। लेकिन जैसा दहलनेवाला दृश्य मैंने धारासणा में देखा वैसा और कहीं देखने को नहीं मिला। कुछ दृश्य तो इतने लोमहर्षक और दर्दनाक थे कि मुझसे देखे तक न गये। स्वयंसेवकों का अनुशासन कमाल का था। गांधी की अहिंसा को उन्होंने अपने रोम रोम में बसा लिया था।' प्रो. मंगुभाई पटेल, 'भारतना स्वातंत्र्य संग्रामो अने तेना घडवैयाओ', सत्याग्रह युग (शीर्षक); पृ. ३६६ से अनुवाद सहित उद्धृत।

८- `४ जुलाई १६३२ को भारतमंत्री ने पार्लमेन्ट में स्वीकार किया कि प्रेस कानून के अंतर्गत १०६ संपादकों-संवाददाताओं और ६८ छापाखानों के खिलाफ कार्रवाई की गई थी।`

६- `यदि आपके (स्टैफर्ड क्रिप्स) यही प्रस्ताव थे तो आपने यहाँ आने का कष्ट क्यों उठाया ? मैं आपको सलाह दूँगा कि आप अगले ही हवाई जहाज से ब्रिटेन लौट जायँ।`

१०- `१६०८ ई० के बम-मुकदमे में बारीन्द्र घोष का कथन, `हम सदैव यह चाहते थे कि आगे चलकर एक क्राँति होगी। हमने कभी भी सोचा नहीं कि राजनीतिक हत्याकांड से हमें आजादी प्राप्त होगी। हमारी मान्यतानुसार हत्याकांड का कारण यह है कि जन-जागृति के लिए यह आवश्यक है।`

११- सोहनलाल द्विवेदी, `भैरवी`, `पूजागीत` (शीर्षक) पृ० १

१२- `पूजागीत`, पृ० २०

१३- वही, पृ० २१

१४- वही, पृ० ४०-४१

१५- वही, पृ० ११-१२

१६- वही, पृ० ४-५

१७- वही, पृ० ३५

१८- वही, पृ० ४२-४३

१६- वही, पृ० ४४-४५

२०- `युगाधार`, `भारतवर्ष` (शीर्षक) पृ० १३४

२१- `भैरवी`, `सुना रहा हूं तुम्हें भैरवी` (शीर्षक) पृ० १११-१२

२२- `भैरवी`, `बुद्धदेव के प्रति` (शीर्षक) पृ० ३७

२३- वही, `तुलसीदास` (शीर्षक) पृ० ६३-६४

२४- `भैरवी` , `आज रुद्ध है मेरी वाणी` (शीर्षक) पृ० १०६

२५- वही, पृ० १०६

२६- `पूजागीत` पृ० ११-१२

२७- सोहनलाल द्विवेदी, `भैरवी`, `प्रभाती` शीर्षक, पृ० ११७

२८- वही, `युगाधार`, `ओ तरुण` शीर्षक, पृ० ४५

२९- सोहनलाल द्विवेदी, `पूजागीत`, पृ० ३३-३४

३०- `भैरवी`, `तरुण` (शीर्षक) पृ० ८३

३१- सोहनलाल द्विवेदी, `पूजागीत` पृ० ६६-६७

३२- सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, `जागो फिर एक बार` (शीर्षक) पृ०

३३- सोहनलाल द्विवेदी, `पूजागीत`, पृ० २६

३४- सोहनलाल द्विवेदी, `प्रभाती`, `प्रस्तावना` शीर्षक पृ० ४

३५- वही, पृ० ६ ५

३६- वही, `उमंग` (शीर्षक), पृ० ६-७

३७- वही, `भावों की रानी से` (शीर्षक) पृ० २-३

३८- `पूजागीत` पृ० १

३९- `भैरवी` `नववर्ष` (शीर्षक) पृ० ९४-९५

४०- `युगाधार` `क्रांतिकुमारी` (शीर्षक) पृ० ११२

४१- वही, पृ० ११३

४२- `पूजागीत`, पृ० २२

४३- वही, पृ० ३६

४४- `पूजागीत`, पृ० ४-५

४५- वही, पृ० ५६

४६- `युगाधार`, `विश्राम` (शीर्षक) पृ० ८३

४७- वही, पृ० ८३

४८- `पूजागीत`, पृ० ८१

४९- `भैरवी`, `जय राष्ट्रीय निशान` (शीर्षक) पृ० १२८

५०- 'पूजागीत' पृ० २१

५१- वही, पृ० २३

५२- 'भैरवी', '~~अनुक्रम~~ नय' (शीर्षक) पृ० ७६

५३- 'पूजागीत', पृ० १८-१९

५४- 'चेतना', 'तुम्हें शपथ है' (शीर्षक) पृ० २०

५५- 'चेतना', 'तरुणाई का तकाजा' (शीर्षक) पृ० १८

५६- 'पूजागीत', पृ० ५३-५४

५७- वही, पृ० ५१-५२

५८- वही, पृ० ५६

५९- वही, पृ० ७६

६०- वही, पृ० ४७

६१- 'युगाधार', 'जन-जागरण' (शीर्षक) पृ० ५७

६२- वही, पृ० ५८-५९

६३- 'युगाधार', 'उगता राष्ट्र' (शीर्षक) पृ० ३२

६४- 'प्रभाती', 'अहिंसा-अवतरण' (शीर्षक) पृ० ४८

६५- ~~'भैरवी', 'खादी गीत' (शीर्षक) पृ० ८~~ 'प्रभाती', 'अहिंसा-अवतरण' (शीर्षक) पृ० ४९

६६- 'भैरवी', 'खादी गीत' (शीर्षक) पृ० ८

६७- 'युगाधार', 'गांधी' (शीर्षक) पृ० ९

६८- 'भैरवी', 'युगावतार गांधी' (शीर्षक) पृ० ३

६९- वही, पृ० २

७०- 'चेतना', 'राष्ट्र देवता' (शीर्षक) पृ० ६

७१- वही, पृ० ७

७२- 'चेतना' 'नीराजना' (शीर्षक) पृ० १३

७३- 'युगाधार', 'जन आगरण' (शीर्षक); पृ० ५५

७४- 'युगाधार', 'बापू के प्रति' (शीर्षक); पृ० २

७५- 'प्रभाती', 'ऐतिहासिक उपवास' (शीर्षक) पृ० ३७

७६- 'चेतना', 'उपवास' (शीर्षक) पृ० १२

७७- 'प्रभाती', 'व्रतसमाप्ति' (शीर्षक) पृ० ४०-४१

७८- 'भैरवी', पृ० ६६

७९- 'भैरवी', पृ० ४४

८०- 'युगाधार', पृ० १०

८१- वही, पृ० १६

८२- वही, पृ० ४२

८३- युगाधार', पृ० ५३

८४- वही, पृ० ६०

८५- 'भैरवी', पृ० ६६

८६- 'वही, पृ० ८५

८७- ८७-'चेतना', पृ० २६

८८- वही, पृ० २७

८९- वही, पृ० ३०

९०- वही, पृ० ३१

९१- 'चेतना', 'वज्रपात' (शीर्षक) पृ० ३८

९२- 'चेतना', 'आज राष्ट्र के कण-कण को गांधी की मूर्ति करेंगे हम' (शीर्षक) पृ० ४३-४४

९३- वही, 'उद्बोधन' (शीर्षक) पृ० ४७

९४- 'मुक्तिगंधा', 'जागरण गीत' (शीर्षक) पृ० ३

९५- वही, 'मुक्तक' (शीर्षक) पृ० २२

९६- वही, 'ज्वाला मंद न हो' (शीर्षक) पृ० २०

९७- वही, 'युगभारती' (शीर्षक) पृ० ७

९८- 'मुक्तिगंधा', 'युगभारती' (शीर्षक) पृ० ८

९९- 'मुक्तिगंधा' पुरोवाक् से उद्धृत ।

१००- वही, ~~'मुक्तक'~~ मुक्तिपर्व' (शीर्षक) पृ० २९

१०१- वही, `आत्मचिन्तन` (शीर्षक) पृ० ३३
१०२- वही, `झण्डे फहरानेवालो` (शीर्षक) पृ० ३६
१०३- वही, `आत्मचिन्तन` (शीर्षक) पृ० ३४
१०३(आ) वही, 'झण्डे फहरानेवालो' (शीर्षक) पृ. ४०
१०४- वही, पृ० ३८
१०५- वही, पृ० ४१
१०६- वही, पृ० ४२
१०७- वही, `दिल्ली दरबार` (शीर्षक) पृ० ५३
१०८- `मुक्तिगंधा`, `झण्डे फहरानेवालो` (शीर्षक) पृ० ४३
१०९- वही, पृ० ४४
११०- वही, पृ० ४८
१११- वही, पृ० ४९
११२- वही, `दिल्ली दरबार` (शीर्षक) पृ० ५४
११३- वही, `झण्डे फहरानेवालो` (शीर्षक) पृ० ५०
११४- `मुक्तिगंधा` `दिल्ली दरबार` (शीर्षक) पृ० ५३
११५- वही, `इतना आज अगर कर पाओ` (शीर्षक) पृ० ५७
११६- वही, `एक बात यह` (शीर्षक) पृ० ५५-५६
११७- `मुक्तिगंधा`, `जागते रहो` (शीर्षक) पृ० ६३-६४
११८- वही, `सीमान्त के पहरुए` (शीर्षक) पृ० ६६
११९- वही, पृ० १०५
१२०- वही, पृ० १०६
१२१- `मुक्तिगंधा`, पृ० ८३ 'नोआखली में गान्धी' (शीर्षक)
१२२- वही, पृ० ८६
१२३- वही, पृ० ९६
१२४- वही, पृ० १०१
१२५- `मुक्तिगंधा` पुरोवाक् से उद्धृत ।